ओ३म्

पाक्षिक
परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५७ अंक - १२ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र जून (द्वितीय) २०१५

महर्षि दयानन्द सरस्वती

नेपाल भूकम्प पीड़ितों को सहायता पहुँचाते आचार्य कर्मवीर एवं उनके सहयोगी

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुख पत्र

वर्ष : ५७ अंक : १२
दयानन्दाब्द: १९१
विक्रम संवत्: आषाढ़ शुक्ल, २०७२
कलि संवत्: ५११६
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११६

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-
भारत में
वार्षिक-२०० रु., द्विवार्षिक-३९० रु., त्रिवार्षिक-५८० रु., आजीवन-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में
वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, द्विवार्षिक-९५ पा./१५२ डा., त्रिवार्षिक-१४० पा./२२५ डा., आजीवन-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२११७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

जून द्वितीय २०१५

अनुक्रम

१. गुजरात की प्रचार यात्रा	सम्पादकीय	०४
२. ध्यानहेयास्तद्वृत्तयः- ११	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१२
४. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		१७
५. ऊमर काव्य	ऊमरदान लालस	१९
६. भारत का गुमनाम भेदिया-पं.रुचिराम	राजेन्द्र जिज्ञासु	२३
७. परोपकारिणी सभा द्वारा किया....	सत्येन्द्र सिंह आर्य	२८
८. पुस्तक-समीक्षा	सत्येन्द्र सिंह आर्य	३३
९. संस्था-समाचार		३६
१०. आर्यजगत् के समाचार		३९
११. स्तुता मया वरदा वेदमाता-१२		४०
१२. जिज्ञासा समाधान-८९	आचार्य सोमदेव	४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

गुजरात की वेद प्रचार यात्रा

सभा का मुख्य कार्य ऋषि द्वारा निर्दिष्ट तीन कार्यों को पूर्ण करना है, उसके साथ ऋषि दयानन्द की सामग्री और उनसे जुड़े तथ्यों की खोज करना और उन्हें सुरक्षित करना भी सभा का ही कार्य है। ऋषि की सामग्री में उनकी निजी वस्तुएँ- खड़ाऊँ, घड़ी, शॉल आदि सम्मिलित हैं। इसी क्रम में 'गुजरात की वेद प्रचार यात्रा' को भी सभा एक बड़े प्रकल्प की तरह, बड़े संकल्प की तरह ले रही है।

प्रथम चरण में ऋषि के हस्तलेखों व वस्तुओं के संरक्षण का कार्य है। राष्ट्रीय संग्रहालय के माध्यम से उन्हें संक्रमण से बचाने का उपाय किया गया है। उनकी पुस्तकों और हस्तलेखों के कम्प्यूटरीकरण (डिजिटिलाइजेशन) का कार्य भी चल रहा है। दूसरे चरण में वस्तुओं के संरक्षण का कार्य होगा, जिसमें आधुनिक तकनीक द्वारा प्रत्येक पृष्ठ को, कागज के प्रत्येक टुकड़े को कीड़ों, धूल आदि से मुक्त कर दीर्घजीवी बनाया जायेगा। तीसरे चरण में इनके अध्ययन, सम्पादन और सूचीकरण का कार्य करना है। इन कार्यों के लिए सभा ने एक योजना बनाई है। प्रत्येक पृष्ठ के लिए ग्यारह सौ रुपये की सहयोग राशि की अपेक्षा रखी है। अभी तक इस योजना को प्रकाशित नहीं किया था, परन्तु अब कार्य प्रगति पर है, अत: जनता को अवगत कराने का उचित अवसर है। जैसे-जैसे सहयोग प्राप्त होगा, इस कार्य में प्रगति हो सकेगी। इस कार्य के लिये प्रथम सहयोग के रूप में माता उर्मिला जी ने अपने सेवा काल में सञ्चित भविष्य निधि (प्रोविडेण्ट फण्ड) में से दस लाख रुपये की राशि प्रदान की, जिससे हम इस कार्य को आगे बढ़ा सके। आगे भी जैसे-जैसे सहयोग प्राप्त होगा, यह कार्य प्रगति करता रहेगा।

ऋषि के हस्तलेखों के संरक्षण का कार्य चल रहा है। पाठकों को जानकर प्रसन्नता होगी कि सभा ने ऋषि के पच्चीस हजार से अधिक हस्तलेखों को स्केन कराकर संगणक (कम्प्यूटर) में सुरक्षित कर दिया है। इसी के साथ ऋषि के समस्त प्रकाशित ग्रन्थों के भी संरक्षण का कार्य चल रहा है। ऋषि की समकालीन पत्र-पत्रिकाओं और उनसे जुड़ी सामग्री की खोज, संरक्षण और प्रकाशन का कार्य भी निरन्तर जारी है। परोपकारी पत्र के माध्यम से लुप्त सामग्री का पुनरुद्धार करने तथा नवीन सामग्री को पत्र के माध्यम से आर्य जनता तक पहुँचाने के कार्य में सभा निरन्तर प्रयत्नशील है। यह सारा कार्य व्यय व श्रम साध्य है और विद्वानों के कठिन परिश्रम तथा जनता के प्रचुर आर्थिक सहयोग के बिना सम्भव नहीं है। जनता का सहयोग निरन्तर प्राप्त होने से कार्य में भी गतिशीलता बनी रहती है। साहित्य के प्रकाशन के क्रम में इन्दौर निवासी चौधरी शिवकुमार जी के सहयोग से अंग्रेजी का सत्यार्थप्रकाश पिछले वर्ष भी छापा और नि:शुल्क वितरित किया। पिछला प्रकाशन सुन्दर नहीं छप पाया था। इस बार पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जी का अंग्रेजी अनुवाद नये रूप में संगणक पर टंकित कराकर मुद्रित किया जा रहा है। यह संस्करण पाठकों के लिए आकर्षक होगा। स्वामी दयानन्द जी की अंग्रेजी की प्रामाणिक जीवनी भी इस वर्ष प्रकाशित हो जायेगी। १८३३ की अर्ध शताब्दी का स्मृति ग्रन्थ भी बड़ा उपयोगी है, जो अनेक वर्षों से अप्राप्य था, वह भी छपने के क्रम में है। आशा है, ऋषि मेले तक उसका भी प्रकाशन हो जायेगा। ऋषि के समस्त ग्रन्थ एक आकार में और अच्छे सुन्दर कागज पर प्रामाणिक रूप में प्रकाशित करने के क्रम में अब तक दयानन्द ग्रन्थमाला का तीन भागों में नवीन संस्करण प्रकाशित हो गया है। ऋषि दयानन्द के पत्र व्यवहार को अद्यतन करने का कार्य गत दस वर्षों से किया जा रहा है। पत्र व्यवहार के प्रकाशन के लिये वसय्ये जी की प्रेरणा से आर्य सभा जीनगर, महाराष्ट्र द्वारा सहयोग किया गया। आशा है, ऋषि मेले तक यह कार्य भी नवीन साज-सज्जा के साथ आर्य जनता को भेंट किया जा सकेगा।

पं. विश्वनाथ जी के अथर्ववेद भाष्य का सम्पादन-संशोधन कर तीन भागों में प्रकाशन हो चुका है। सामवेद का ब्रह्ममुनि भाष्य भी सभा ने पहले ही प्रकाशित कर दिया है। ऋग्वेद के सप्तम, नवम मण्डल का आर्यमुनि जी का भाष्य भी सभा ने प्रकाशित कर दिया है। ऋग्वेद के अष्टम मण्डल का भाष्य सभा द्वारा प्रकाशित करने का प्रयास चल रहा है। वेदांग प्रकाश और व्याकरण ग्रन्थों का भी उत्तम संस्करण शीघ्र प्रकाशित हो जाये, इसके लिये संशोधन का कार्य चल रहा है।

इस मध्य आदरणीय प्रा. राजेन्द्र जी जिज्ञासु के प्रयास

से ऋषि जीवन की अनुपलब्ध सामग्री सभा को प्राप्त हुई है। इस सामग्री के महत्त्व को देखते हुए ऋषि मेले पर विशेष आयोजन का निश्चय किया गया है। इसी क्रम में ऋषि दयानन्द के विचारों और कार्यों से उनके जन्म प्रान्त के लोगों को अवगत कराने के लिए परोपकारिणी सभा ने गुजरात में एक वेद प्रचार यात्रा का भी आयोजन करने का निश्चय किया है। ऋषि दयानन्द अपने जीवन काल में गुजरात से निकल कर एक बार १८७५ में वहाँ गये थे। उनकी यह यात्रा अक्टूबर १८७८ में प्रारम्भ हुई थी। इसके बाद ऋषि दयानन्द का पुन: गुजरात जाना सम्भव नहीं हुआ। इस घटना को आज १४० वर्ष होने जा रहे हैं। हम ऋषि मेले के अवसर पर इस यात्रा का स्मरण करें, उससे पूर्व गुजरात की वेद प्रचार यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। इस यात्रा में ऋषि जीवन के अनछुए पक्ष पर प्रकाश डाला जा सकेगा।

यह प्रचार यात्रा ऋषि के जीवन को जहाँ नये दृष्टिकोण से देखने का अवसर देगी, वहाँ नई पीढ़ी के लोगों को ऋषि दयानन्द के कार्यों और विचारों से अगवत कराने में भी सहायक होगी। आज तक हम महर्षि दयानन्द के महत्त्व को नहीं समझ सके हैं, मूल्यांकन करना तो बहुत दूर की बात है। पाठकों को आश्चर्य होगा कि आज भले ही ऋषि दयानन्द को इस देश के लोग नहीं जानते और पहचानते हों, आर्य समाज के लोगों को भी उस गौरवशाली व्यक्तित्व का बोध नहीं, जिसे पढ़कर किसी भी वैदिक धर्मी को गर्व हो सकता है, किन्तु ऋषि दयानन्द अपने जीवन काल में ही अमेरिका, जर्मनी और यूरोप के देशों में विचार और चिन्तन का विषय बन चुके थे। इस यात्रा के माध्यम से उन्हीं अज्ञात प्रसंगों को उजागर करने का प्रयास किया जायेगा।

इस यात्रा में गुजरात के उन स्थानों पर प्रमुख रूप से पहुँचने का प्रयास रहेगा, जहाँ ऋषि अपनी प्रचार यात्रा के क्रम में गये थे। उसके साथ ही अन्य आर्यसमाज मन्दिर, सभा एवं संस्थाओं से भी सम्पर्क कर सम्पूर्ण क्षेत्र में ऋषि जीवन की चर्चा करने का प्रयास रहेगा। इस यात्रा में सभा के अधिकारी व सम्माननीय सदस्यों के अतिरिक्त विद्वान्, उपदेशक, भजनोपदेशक, कार्यकर्त्ता आदि बड़ी संख्या में भाग लेंगे। यात्रा में सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य भी विक्रयार्थ सुलभ रहेगा। प्रचार साहित्य भी बड़ी संख्या में वितरित किया जायेगा। जो समाज संस्थायें आर्य साहित्य के इस प्रचार-प्रसार के क्रम में भाग लेना चाहें, वे वेद, वैदिक साहित्य एवं आर्ष ग्रन्थों के साथ ही आर्य सिद्धान्ताकूल साहित्य भी रख सकेंगे। इतनी लम्बी यात्रा और समय कम होने के कारण यात्रा वाहनों द्वारा ही सम्भव होगी। जो लोग यात्रा में भाग लेना चाहते हैं, वे अपनी संस्था, समाज एवं व्यक्तिगत साधनों के द्वारा इसमें भाग ले सकेंगे। इस यात्रा में गुरुकुल सूपा, कच्छोली, नवसारी, सूरत, भरुच, बड़ौदा, चाणोद, कर्णावती (अहमदाबाद), आणन्द, भावनगर, दीव, पोरबन्दर, जामनगर, चोटीला, जूनागढ़, राजकोट, टंकारा, मोरबी, गाँधीधाम, भुज, लुड़वा, नखत्राणा, माण्डवी, अञ्जार, भाभर, पाटन, डीसा आदि स्थानों पर जाने का कार्यक्रम है। यात्रा में सुविधा व आवश्यकतानुसार कार्यक्रम में परिवर्तन सम्भव है।

आप इस यात्रा में सम्मिलित हो सकते हैं और यात्रा में आर्थिक सहयोग प्रदान कर इसे सफल बना सकते हैं। साहित्य के प्रचार-प्रसार में भी सहायक बन सकते हैं।

ऋषि दयानन्द उन थोड़े से लोगों में से हैं, जिन्होंने शास्त्र के इस निर्देश का अक्षरश: पालन किया है- शास्त्र कहता है, प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में स्वाध्याय करने और प्रवचन करने में कभी आलस्य नहीं करना चाहिए। इस कारण जहाँ वे निरन्तर यात्रा में व्यस्त रहे, वहीं उनकी लेखनी भी कभी रुकी नहीं। एक बार स्वामी जी के अनन्य सेवक मुंशी समर्थदान ने उनसे कहा था- महाराज, आप भ्रमण करते रहते हैं, अत: लेखन, प्रकाशन के कार्य में गति नहीं आ पाती। आप प्रेस में आकर बैठ जायें और लेखन का कार्य करें, इससे लिखना भी तीव्रता से होगा और प्रकाशन भी शीघ्र हो सकेगा। तब स्वामी जी महाराज ने उत्तर दिया- समर्थदान, तुम ठीक कहते हो। यदि मैं एक स्थान पर बैठकर लिखने का कार्य करूँ तो लेखन कार्य में गति आ सकेगी, परन्तु केवल लिखकर, छापकर रखने से उन ग्रन्थों को पढ़ेगा कौन? यदि उनका प्रचार न किया जाय तो लोगों को उनका परिचय कैसे मिलेगा?

यह बात सच है कि यदि स्वामी जी महाराज ने पूरे देश में घूम-घूम कर प्रचार नहीं किया होता तो उनके विचारों से कौन परिचित हो पाता? यदि लिखा न होता तो आगे आने वाली पीढ़ियों को प्राप्त क्या होता? अत: विचारों के प्रसार के लिए प्रचार और लेखन दोनों ही अनिवार्य हैं। प्रचार से विचार को तात्कालिक रूप से परिचित कराया जा सकता है, वहीं साहित्य की उपस्थिति से विचार में

स्थायित्व आता है। आज पुस्तकालय हैं और लिखित सामग्री है, उसी कारण से ज्ञान उपलब्ध है। यदि ग्रन्थ नहीं होते तो हम उन विचारों से परिचित नहीं हो पाते।

आगे भी पण्डित लेखराम जी ने इस रहस्य को समझा था और अन्तिम क्षण तक वे प्रचार के साथ-साथ लेखन कार्य में लगे रहे। मृत्यु के समय भी आर्य जनता को उन्होंने जो अन्तिम सन्देश दिया, उसमें उन्होंने यही कहा था- आर्यसमाज से तहरीर और तकरीर का कार्य अर्थात् लेखन और प्रचार का कार्य बन्द नहीं होना चाहिए। जब तक आर्यसमाज ने इस परम्परा का निर्वाह किया, तब तक प्रचार-प्रसार ठीक से चलता रहा, परन्तु उसके बाद हमारे कार्यों में शिथिलता आ गई, आर्यसमाज भी सिकुड़ता चला गया। अन्य मत-सम्प्रदायों में तो परम्परा से गुरु-चेले बनते रहते हैं, परन्तु आर्यसमाज में ऐसी परम्परा विकसित नहीं हो सकी। जिन गुरुकुलों व उपदेशक विद्यालयों से उपदेशक तैयार होते थे, उनके बन्द होने की समाज ने चिन्ता नहीं की। हम भवनों के अन्दर सीमित होकर रह गये।

आज जनता से साक्षात् जुड़े बिना किसी भी विचार को सफलता नहीं मिलती। सभा ने जहाँ गुरुकुल संचालित कर विद्वान् व उपदेशक तैयार करने का कार्य प्रारम्भ किया है, वहीं प्रचारकों के रूप में अनेक विद्वान्, वानप्रस्थी, ब्रह्मचारी आदि अपने-अपने क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं।

इसी क्रम में जन-सम्पर्क द्वारा जनता को महर्षि के विचारों से अवगत कराने तथा नवीन उत्साह के संचार के निमित्त सभा ने गुजरात यात्रा का आयोजन किया है। निश्चित रूप से यह आयोजन आर्य जनता में उत्साह उत्पन्न करेगा। जब उन्हें सामूहिक संगठनात्मक रूप से विचारों के प्रचार-प्रसार और साहित्य के निर्माण की प्रेरणा मिलेगी, तभी शास्त्र का यह आदेश सफल हो सकेगा-

स्वाध्यायप्रवचनाभ्याम् न प्रमदितव्यम्।

- धर्मवीर

महर्षि की दूरदर्शिता

ऋषि केवल धर्म प्रचारक या समाज सुधारक ही नहीं थे, भारत की राजनीतिक गतिविधियों पर भी उनकी तीक्ष्ण दृष्टि रहती थी। अंग्रेज सरकार राजे-रजवाड़ों के अधिकार हड़पने की कुटिल चाल चलती थी, जिनकी सन्तान न हों या अवयस्क हों, उन राज्यों को छीन लेती थी। ऐसी परिस्थिति में जब कच्छ-भुज के राजा प्रागमल का उत्तराधिकारी खेंगार जी मात्र १३-१४ वर्ष का था, उसके पिता का स्वर्गवास हो गया, तब ऋषि को वहाँ अंग्रेजों द्वारा किये जाने वाले किसी अनर्थ की आशंका हुई। इसके प्रतिकार के लिये ऋषि ने सरकार के सम्मानित इन दो व्यक्तियों को इस विषय का संकेत करते हुए निम्न पत्र लिखा और डाक द्वारा सीधे न भेजकर यह पत्र श्री सेवकलाल कृष्णलाल, मन्त्री आर्यसमाज मुम्बई के नाम १८ जनवरी सन् १८८१ के पत्र के साथ भेजा था। - **सम्पादक**

राव गोपालरावहरि देशमुख

महादेव गोविन्द रानडे

आप देश के परम हितैषी हैं। हिन्दी जैसे सब देश पर दृष्टि रखते हैं। विशेष कृपादृष्टि कच्छ भुज देश पर भी कीजिये।

जिससे यथोचित सुशिक्षा हो, सत्य सत्य करेंगे यह भी आशा है, क्योंकि इस समय रावसाहब नाबालिग हैं।

जो मैं कहीं इस समय आता तो आप सब मिलते, परन्तु फिर मुझको वह विदित न था। यहाँ व्याख्यान (होते हैं) और भी कुछ काम हैं। [अत:] कैसे आ सकता हूँ। जो मैं राजपूताना की ओर आया और समय देखा जब आना होगा। आपको सूचना हो जावेगी। मैं जदीद [नवीन] स्थान पर जाऊँ तो ठीक है। उस अहाता का भी याद करोगे।

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

ध्यानहेयास्तद्वृत्तयः- ११

- स्वामी विष्वङ्

महर्षि पतञ्जलि ने पिछले सूत्र **(ते प्रतिप्रसवहेयाः सूक्ष्माः)** में तत्त्वज्ञान रूपी प्रसंख्यान अग्नि से जले हुए बीजों के समान बने क्लेशों के कारण की प्रकृति में विलीन होने की बात कही है। दग्धबीजभाव को प्राप्त हुए क्लेश स्वकारण में विलीन तब होंगे, जब प्रसंख्यान रूपी तत्त्वज्ञान प्राप्त होगा। प्रसंख्यान रूपी तत्त्वज्ञान किस प्रकार सूक्ष्म क्लेशों को समाप्त करता है और तत्त्वज्ञान किस प्रकार प्राप्त होता है, इसकी चर्चा प्रस्तुत सूत्र में की गयी है। सूत्र का अभिप्राय है- सूक्ष्मत्त्व को प्राप्त हुए क्लेश तत्त्वज्ञान रूपी ध्यान से समाप्त करना चाहिए। सूक्ष्म क्लेशों को ध्यान से किस प्रकार समाप्त करते हैं? इसकी प्रक्रिया महर्षि वेदव्यास ने प्रस्तुत सूत्र के भाष्य में स्पष्ट की है। भूमिका के रूप में ऋषि लिखते हैं-

स्थितानां तु बीजभावोपगतानाम्।

अर्थात् ऐसे क्लेश जो बीजभाव को प्राप्त हुए हैं। क्लेश विद्यमान तो हैं, परन्तु उदार (वर्तमान में कार्यरत होने की) अवस्था में नहीं आ सकते। इसका कारण यह है कि उन्हें प्रसंख्यान रूपी तत्त्वज्ञान से बीजों के समान बना दिया गया है। ऐसे बीजभाव को प्राप्त हुए क्लेश विद्यमान होते हुए भी कार्यरत नहीं होते हैं, परन्तु कभी-न-कभी कार्यरत हो सकते हैं, इसलिए इन बीजभाव को प्राप्त हुए क्लेशों को सर्वथा नष्ट करना चाहिए। इसका समाधान प्रस्तुत सूत्र में उदाहरण सहित स्पष्ट किया है। प्रस्तुत सूत्र की व्याख्या करते हुए महर्षि वेदव्यास कहते हैं-

क्लेशानां या वृत्तयः स्थूलास्ताः क्रियायोगेन तनूकृताः सत्यः।

अर्थात् अविद्या, अस्मिता आदि पाँचों क्लेशों की जो स्थूल प्रवृत्तियाँ हैं, वे क्रियायोग के माध्यम से सूक्ष्म होती हैं। यद्यपि क्लेशों की चार प्रकार की (प्रसुप्त, तनू, विच्छिन्न और उदार के रूप में) स्थितियाँ हैं, परन्तु सूत्रकार एवं भाष्यकार ने उन चारों अवस्थाओं को दो विभागों में बाँट दिया है। एक विभाग का नाम **स्थूल** रखा है और दूसरे का **सूक्ष्म** रखा है। स्थूल विभाग में उदार अवस्था वाले क्लेश रहते हैं और सूक्ष्म विभाग में प्रसुप्त, तनू और विच्छिन्न अवस्था वाले क्लेश रहते हैं। स्थूलता और सूक्ष्मता का अन्तर इस प्रकार का भी होता है कि जो क्लेश उदार अवस्था में रहते हैं, वे यदि उग्र रूप में प्रवृत्त होते हैं तो उनका परिणाम भी उग्रता से प्राप्त होता है। ऐसी स्थिति में उन उदार अवस्था वाले उग्र क्लेशों को स्थूल वृत्तियाँ कहते हैं। जो क्लेश उदार अवस्था में तो हैं, परन्तु उनमें उग्रता नहीं है, अति मन्दता है, अर्थात् अत्यन्त कमजोर होकर प्रवृत्त हो रहे हैं और जिनका परिणाम भी अति निम्नता से- अल्प मात्रा में मिलता है, ऐसी स्थिति में उन उदार अवस्था वाले मन्द गति से प्रवृत्त होने वाले क्लेशों को सूक्ष्म वृत्तियाँ कहते हैं।

महर्षि वेदव्यास ने क्रियायोग से क्लेशों को सूक्ष्म करने की बात कही है। क्रियायोग का पहला विभाग '**तप**' है। बिना तप के क्लेश कमजोर नहीं हो सकते, इसलिए योगसाधक काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, अहंकार को दबाता है, अर्थात् जब-जब क्लेश उग्र होकर प्रवृत्त होने की स्थिति में आते हैं, तब-तब योगसाधक उन्हें दबाकर सहन करता है। बार-बार क्लेश उभरने लगते हैं तो योग साधक बार-बार दबाता है, परन्तु प्रत्येक बार क्लेश दब जायें- ऐसा सम्भव नहीं हो पाता है, इसलिए क्रियायोग का दूसरा विभाग काम में आता है और वह विभाग '**स्वाध्याय**' है। स्वाध्याय योगसाधक को यथार्थ का बोध कराता है, जिससे क्लेशों को दबाने में सरलता होती है। जितने-जितने शास्त्रों का स्वाध्याय योगसाधक करता जाता है, उतने-उतने अंश में क्लेशों को सूक्ष्म करने में सरलता होती है, इसलिए ऋषि ने क्रियायोग में तप के साथ स्वाध्याय को ग्रहण किया है। जहाँ स्वाध्याय क्लेशों को कमजोर करने का कार्य करता है, वहाँ स्वाध्याय योगसाधक को ईश्वर के निकट भी ले जाता है। स्वाध्याय से ईश्वर के यथार्थ स्वरूप को भली प्रकार जाना जाता है। जैसे ही योगसाधक ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभावों को स्वाध्याय के माध्यम से जान लेता है, वैसे ही ईश्वर के प्रति नतमस्तक हो जाता है। ईश्वर की व्यापकता आदि गुणों को समझ कर **ईश्वरप्रणिधान** से युक्त हो जाता है, अर्थात् ईश्वर को ध्यान में रखते हुए समस्त कर्मों को करता है और उन कर्मों को, ईश्वर को समर्पित करने लगता है। इस प्रकार क्रियायोग में तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्राणिधान को ग्रहण किया है। योगसाधक तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान के माध्यम से पाँचों क्लेशों को कमजोर कर देता है।

महर्षि वेदव्यास क्लेशों की सूक्ष्मता को क्रियायोग से कमजोर करने की बात कहकर '**ध्यानहेयाः**' को समझाते

हुए कहते हैं -

प्रसंख्यानेन ध्यानेन हातव्या यावत्सूक्ष्मीकृता यावद्दग्धबीजकल्पा इति।

अर्थात् सत्त्व= जड़ पदार्थ और पुरुष= आत्मा चेतन पदार्थ- इन दोनों को अलग-अलग जानना ही सत्त्वपुरुष-अन्यताख्याति कहलाती है। उसी सत्त्वपुरुष-अन्यताख्याति को प्रसंख्यान अर्थात् उत्कृष्ट तत्त्वज्ञान कहते हैं। उस उत्कृष्ट तत्त्वज्ञान रूपी प्रसंख्यान ज्ञान से सूक्ष्म हुए क्लेशों को समाप्त- नष्ट करना चाहिए। जब तक क्लेश जले हुए- भुने हुए चने के समान नहीं बनते, तब तक उन्हें प्रसंख्यान ज्ञान से चोट पहुँचाना चाहिए, जिससे वे जले हुए बीजों के समान बन सकें। महर्षि पतञ्जलि ने ध्यान से क्लेशों को नष्ट करने की बात कही है और महर्षि वेदव्यास ने ध्यान शब्द को स्पष्ट करते हुए प्रसंख्यान अर्थ किया है। यद्यपि मन की प्रारम्भिक तीन (क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त) में से किसी भी अवस्था में ध्यान किया जाता है, परन्तु मन की चौथी अवस्था (एकाग्र) में जो ध्यान होता है, उसी एकाग्र अवस्था वाले ध्यान को प्रस्तुत सूत्र में ग्रहण किया है। एकाग्र अवस्था की उत्कृष्ट स्थिति में जड़ और चेतन के पृथकत्व का बोध होता है। उस पृथकत्व का बार-बार अभ्यास करने से पूर्ण वैराग्य हो जाता है। वैराग्य की पूर्णता में तत्त्वज्ञान की पराकाष्ठा= अन्तिम सीमा आ जाती है, उस अवस्था में योगाभ्यासी सूक्ष्म हुए पाँचों क्लेशों को प्रसंख्यान ध्यान से नष्ट कर देता है।

महर्षि वेदव्यास ने क्लेशों को नष्ट करने की प्रक्रिया को सर्वसामान्य लौकिक उदाहरण से समझाया है-

यथा वस्त्राणां स्थूलो मलः पूर्वं निर्धूयते पश्चात् सूक्ष्मो यत्नेनोपायेन वाऽपनीयते।

अर्थात् जिस प्रकार लोक में देखा जाता है कि वर्षा काल में या किसी अन्य परिस्थितियों में वस्त्र कीचड़ से या धूल-मिट्टी से अधिक गन्दे हो जाते हैं, ऐसी स्थिति में कपड़े धोने वाला पहले उन गन्दे वस्त्रों को सादे पानी से धो लेता है। फिर भी वस्त्रों में सूक्ष्म मल रहता है, उस सूक्ष्म मल को दूर करने के लिए व्यक्ति को विशेष प्रयत्न करना होता है और व्यक्ति करता भी है। क्या करता है? यह सब जानते हैं कि अच्छे से अच्छे साबुन, सर्फ या केमिकल आदि का प्रयोग करके वस्त्रों को स्वच्छ किया जाता है। ऋषि कहते हैं-

तथा स्वल्पप्रतिपक्षाः स्थूला वृत्तयः क्लेशानां सूक्ष्मास्तु महाप्रतिपक्षा इति।

अर्थात् जिस प्रकार वस्त्रों के सम्बन्ध में बताया है, ठीक उसी प्रकार क्लेशों के सम्बन्ध में भी समझना चाहिए। क्लेश आत्मा की उन्नति में बाधक होने से उन्हें मल कहा गया है और ये मल रूपी क्लेश मन में रहते हैं। जब तक क्लेश मन में रहते हैं, तब तक मन अशुद्ध बना रहेगा और अशुद्धि के रहते हुए मन एकाग्र नहीं होता, बिना एकाग्रता के योग नहीं होता, इसलिए मल रूपी क्लेशों को हटाने के लिए पहले क्रियायोग को अपनाया जाता है। तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान कर-करके क्लेशों की उग्रता को कम किया जाता है, अर्थात् क्लेश कमजोर- सूक्ष्म बन जाते हैं। एक प्रकार से क्लेशों के स्थूल मल को हटाने के लिए क्रियायोग सादे पानी के समान है। जैसे वस्त्रों में अधिक मल जमा हो, तो बार-बार पानी से धोकर हटाया जाता है, वैसे ही स्थूल (उग्र) क्लेशों को भी बार-बार क्रियायोग का अभ्यास कर-करके कमजोर किया जाता है। जब क्रियायोग का कार्य पूर्ण होता है, तब प्रसंख्यान ध्यान का कार्य प्रारम्भ होता है।

वस्त्रों का स्थूल मल तो दो-तीन बार सादे पानी से धुल जाता है, परन्तु क्लेशों की उग्रता दो-तीन बार तप, स्वाध्याय व ईश्वरप्रणिधान से दूर नहीं होती। उसके लिए क्रियायोग को अनेक बार लम्बे काल तक, निरन्तरता से करने पर ही सफलता मिलती है। लम्बे काल तक किये बिना निरन्तरता के क्लेश कमजोर नहीं होते, इसलिए धैर्य से इस कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए। जब लम्बे काल तक निरन्तरता से क्रियायोग का अभ्यास हो जाने से क्लेश सूक्ष्म हो जाते हैं, तब मन की सात्त्विकता को बनाये रखते हुए योग के ध्यान पर्यन्त अंगों का निष्ठापूर्वक अभ्यास करके पूर्ण एकाग्रता को पाकर समाधि लगाई जाती है। उससे विशेष तत्त्वज्ञान प्राप्त होता है, जिसे प्रसंख्यान ज्ञान कहा जाता है। उसी प्रसंख्यान से क्लेशों की सूक्ष्मता को भी साबुन, सर्फ या केमिकल के समान नष्ट किया जाता है- जले-भुने हुए बीजों के समान बना दिया जाता है, जिससे वे फिर कभी अंकुरित नहीं होते हैं। साबुन, सर्फ या केमिकल थोड़े से पुरुषार्थ से प्राप्त हो जाते हैं, परन्तु प्रसंख्यान ध्यान को प्राप्त करना अत्यन्त कठिन कार्य है। इसके लिए कभी पचास वर्ष कम पड़ते हैं तो कभी सौ वर्ष कम पड़ते हैं और दो-तीन जन्म या उससे भी अधिक जन्म लग सकते हैं, परन्तु असम्भव नहीं है। हाँ, कठिन अवश्य है। चींटियों की तरह प्रयत्न में लगे रहने से कभी-न-कभी लक्ष्य अवश्य साध लेंगे।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग—साधना शिविर

दिनांक : २५ अक्टूबर से ०१ नवम्बर, २०१५

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर **'मन्त्री परोपकारिणी सभा'** अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

विवाह करके स्त्री-पुरुषों को चाहिये कि जिस-जिस काम से विद्या, अच्छी शिक्षा, बुद्धि, धन, सुहृद्भाव और परोपकार बढ़े उस कर्म का सेवन अवश्य किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

जिसके माता और पिता विद्वान् न हों, उनके सन्तान भी उत्तम नहीं हो सकते।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.९

मनुष्यों को चाहिये कि पुरुषार्थ से विद्या का सम्पादन, विधिपूर्वक अन्न और जल का सेवन, शरीरों को नीरोग और मन को धर्म में निवेश करके सदा सुख की उन्नति करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.१४

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

महर्षि दयानन्द का पत्र व्यवहार:- परोपकारिणी सभा महर्षि दयानन्द जी का पत्र व्यवहार तथा श्री हरबिलास शारदा लिखित ऋषि का अंग्रेजी में लिखा गया जीवन चरित्र पुन: प्रकाशित करने जा रही है। जीवन चरित्र के प्रूफ आदि श्री सत्येन्द्रसिंह जी आर्य तथा श्रीमती ज्योत्स्ना आर्या जी देख रही हैं। पत्र व्यवहार का कार्य विरजानन्द जी को सौंपा गया था। इसे यशस्वी विद्वान् डॉ. वेदपाल जी अब देख रहे हैं। मान्य वेदपाल जी के पश्चात् एक दृष्टि मैं डालूँगा।

आदरणीय वेदपाल जी की प्रेरणा से ऋषि जी के पत्र व्यवहार पर मैं कई अंकों में कुछ लिखूँगा। आशा है कि मेरे चिन्तन, मनन व खोज का आर्य जनता तथा इतिहास प्रेमी भरपूर लाभ उठायेंगे। श्री गोपालराव हीर जी ने तीन भागों में दयानन्द दिग्विजयार्क लिखा था। फर्रुखाबाद ऋषि कई बार पधारे, अत: अपने गृहनगर के समाज तथा वहाँ के आर्य पुरुषों के पत्रों का उन्होंने कुछ उपयोग किया।

फिर पं. लेखराम जी ने जब घूम-घूम कर ऋषि जीवन की सामग्री की खोज का कार्य हाथ में लिया। आपने ऋषिवर के अनेक पत्रों की खोज की, उनकी प्रतिलिपि भी की। अपने ग्रन्थ में आपने ऐसे कई पत्रों को उद्धृत करने की दूरदर्शिता दिखाई। आर्यसमाज के जीवनी साहित्य में पं. लेखराम जी ही ऐसे प्रथम गवेषक व जीवनी लेखक हैं, जिन्होंने चरित्र नायक के पत्रों की खोज भी की तथा उनका अपने ग्रन्थ में उपयोग प्रयोग भी किया। यह इस दिशा में उठाया गया प्रथम पग था।

पूज्य पं. भगवद्दत्त जी ने स्वयं लिखा है कि सम्वत् १९६८ में आपने पं. लेखराम कृत ऋषि जीवन पढ़ा तो इससे ऋषिवर की ''महत्ता मेरे हृदय पर विशेष अङ्कित हुई।''[१] इसी ग्रन्थ के पाठ से महान् गवेषक ऋषि भक्त पं. भगवद्दत के मन में ऋषि के पत्रों की खोज, संग्रह व प्रकाशन का आन्दोलन छेड़ने का विचार उपजा। यह एक निर्विवाद तथ्य है। सम्वत् १९७२ में पं. भगवद्दत्त जी ने बी.ए. उत्तीर्ण किया। उन्हीं दिनों आपने व्याख्यान देना आरम्भ कर दिया था। युवा भगवद्दत्त की वाणी में ओज था, जोश था। आप जब अपने व्याख्यानों में ऋषि के प्रेरक प्रसंग सुनाते थे तो श्रोता झूम उठते थे।

लाहौर में सरदार रूपसिंह नाम के एक ऋषि भक्त ने तरुण भगवद्दत्त के कई व्याख्यानों में ऋषि की चर्चा सुनी तो प्रभावित होकर उनसे भेंट की। आपने स्वत: प्रेरणा से भगवद्दत्त जी को बताया कि मेरे पास ऋषि जी के कुछ पत्र हैं। पण्डित जी की विनती पर सरदार रूपसिंह जी ने प्यारे ऋषि के वे पत्र भगवद्दत्त जी को भेंट कर दिये। आर्यसमाज के इतिहास में यह एक ऐतिहासिक दिन था, जब रूपसिंह जी ने पण्डित भगवद्दत्त जी को ऋषि के पत्र भेंट किये।

यह रूपसिंह कौन थे:- ऋषि भक्त रूपसिंह सिख परिवार में जन्मे एक भावनाशील आर्य थे। इनकी चर्चा पं. लेखराम जी, श्री लक्ष्मण आर्योपदेशक लिखित ऋषि जीवन में एक से अधिक बार की गई है। इन पंक्तियों के लेखक ने तो ऋषि जीवन में इन पर विशेष टिप्पणियाँ दी हैं। रूपसिंह जी राजस्थान में भी कुछ समय रहे। आप ऋषि के सम्पर्क में आये। खेद है कि अन्य-अन्य जीवनी लेखकों का ध्यान इस ऋषि भक्त की ओर नहीं गया।

रूपसिंह जी ने भगवद्दत्त जी को ऋषि के पत्र सौंप कर भगवद्दत्त जी के मन में ऋषि के पत्रों की प्रीति उत्पन्न कर दी। उन्हीं दिनों लोकप्रिय आर्य 'साप्ताहिक प्रकाश' के सम्पादक श्रीमान् महाशय कृष्ण ने महर्षि के पत्रों को यदाकदा प्रकाशित करने का क्रम चलाकर ऋषि के पत्र व्यवहार की खोज व संग्रह के आन्दोलन को बल प्रदान किया। स्मरण रहे, पत्रकार शिरोमणि महाशय कृष्ण जी के 'प्रकाश' के उन दिनों के अंकों में ऋषि जीवन विषयक स्थायी महत्त्व की पर्याप्त सामग्री होती थी। हमने उन अङ्कों का 'महर्षि का सम्पूर्ण जीवन चरित्र' के सम्पादन में भरपूर लाभ प्राप्त किया। सो महाशय जी भी इस आन्दोलन के एक जनक थे। ऋषि के पत्र-व्यवहार में रुचि रखने वालों को इस तथ्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये।

उस युग के जिन आर्यों ने ऋषि के पत्र व्यवहार संग्रह आन्दोलन में सक्रिय रुचि ली, वे सब हमारे धन्यवाद के पात्र हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी, पं. चमूपति जी, महाशय मामराज, आचार्य रामदेव जी, महात्मा नारायण स्वामी जी, महाकवि शंकर शर्मा जी- सबने इस यज्ञ में आहुति डाली। वर्तमान काल में पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक, डॉ. धर्मवीर जी तथा पं. विरजानन्द जी ने भी कई नये पत्रों की खोज करके इस आन्दोलन को आगे बढ़ाया।

अतीत में स्वामी श्रद्धानन्द जी, आचार्य रामदेव जी,

पं. चमूपति जी ने सामाजिक पत्रों में ऋषि के पत्र व्यवहार पर अत्यन्त मार्मिक व पठनीय लेख दिये। उन लेखों को संग्रहीत करके पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जाता तो बड़ा लाभ मिलता। ऋषि के पत्रों पर चिन्तन मनन तो उपरोक्त सब विद्वानों ने किया, परन्तु पं. भगवद्दत्त जी के पश्चात् पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक की टिप्पणियों से ऋषि जीवनी के लेखकों को ठोस लाभ मिला है। पं. घासीराम जी तथा श्री हरबिलास शारदा ने ऋषि जीवन के लेखन में पत्र व्यवहार का प्रशंसनीय उपयोग किया।

पत्र व्यवहार के गहन अध्ययन के बिना न तो ऋषि के जीवन चरित्र के साथ कोई न्याय कर सकता है और न ही ऋषि के व्यक्तित्व का यथार्थ मूल्याङ्कन किया जा सकता है। इसके कुछ ठोस प्रमाण हम यहाँ देते हैं।

१. महर्षि के विषपान की घटना को चुनौती देने वाले प्रिं. श्रीराम शर्मा तथा पं. लक्ष्मीदत्त दीक्षित दोनों का एक प्रबल कुतर्क यह था कि ऋषि का रसोइया तो शाहपुराधीश का व्यक्ति था। वह भला कैसे यह पाप कर सकता था? हमने शाहपुराधीश के नाम ऋषि के पत्र का प्रमाण देकर दोनों की बोलती बन्द कर दी। पं. लेखराम जी ने वह पत्र देकर बड़ी दूरदर्शिता का परिचय दिया है। उस पत्र में ऋषि ने लिखा है कि शाहपुरा से दिये गये सब नौकर-चाकर बहुत निकम्मे थे। सोचिये! यदि यह पत्र सुरक्षित न किया जाता तो.....।

२. महर्षि के जीवनी लेखकों तथा यात्रा वृत्तान्त लिखने वालों ने सन् १८८० के नवम्बर मास में ऋषि के अलीगढ़ आने तथा कुछ दिन उधर भ्रमण का कोई उल्लेख नहीं किया। हमने ऋषि के २१ नवम्बर १८८० के दिन अलीगढ़ से लिखे पत्र के प्रमाण से उनकी अलीगढ़ छलेसर यात्रा का उल्लेख किया है। 'भारत सुदशा प्रवर्त्तक' में छपे समाचार को खोजकर हमने इस पत्र में दी गई जानकारी की पुष्टि कर ली है। ऐसी कई महत्त्वपूर्ण बातों का पता पत्रों से ही प्राप्त हुआ है।

३. सन् १८८० के जनवरी के अन्तिम दिनों अथवा १, २ फरवरी को कच्छ भुज के अवयस्क राजा खेंगार के बारे में सेवकलाल कृष्णलाल के हाथ (डाक से नहीं) एक पत्र गोविन्द रानडे व गोपालराव हरि देशमुख को भेजा। इस पत्र की ओर जीवनी लेखकों का ध्यान नहीं गया। दीन दरिद्र असहाय देशवासियों की ऋषि को कितनी चिन्ता थी, यह इस पत्र से पता चलता है। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्य भारतीय विचारकों से यही तो ऋषि की विलक्षणता थी। आपको किसी भी सुधारक विचारक द्वारा लिखा गया ऐसा कोई पत्र नहीं मिलेगा, इसलिए ऋषि के पत्र व्यवहार का गम्भीर अध्ययन व अन्वेषण करने की अभी बहुत आवश्यकता है। शेष फिर।

भ्रम भञ्जनः- ऋषि मेला पर आने वाले कई सज्जनों ने मिलने पर कई प्रश्न पूछे। एक युवक ने कहा, "मैंने एक डी.ए.वी. संस्था में किसी भाई के भाषण में यह सुना कि ऋषि दयानन्द जी ने भाई जवाहर सिंह को परोपकारिणी सभा का सदस्य बनाया था। आपके ग्रन्थ में भाई जवाहरसिंह की चर्चा को ध्यान से पढ़ा पर उसमें आपने ऐसा नहीं लिखा। इसका कारण?" हमने उस सज्जन से कहा, "इस प्रश्न का उत्तर परोपकारी में दिया जावेगा।" बात यह है कि एक गोरे विदेशी ने भी यह लिखा है कि भाई जवाहरसिंह परोपकारिणी सभा के उप प्रधान थे। उस विदेशी की पुस्तक को डी.ए.वी. में तथा अंग्रेजी पठित बाबुओं ने बहुत चाव से पढ़ा। हमने तो तब भी उसकी कई भ्रामक बातों का प्रतिवाद किया था। न जाने कुछ लोग गोरों की रिसर्च पर इतने मोहित क्यों हैं? यह कथन महाझूठ है।

हमने ऋषि के पत्र व्यवहार तथा परोपकारिणी सभा के एक निर्माता श्री हरबिलास शारदा आदि विद्वानों के कई खोजपूर्ण प्रामाणिक ग्रन्थों व पत्र-पत्रिकाओं को देखकर ऋषि जीवन पर कार्य किया है। ऋषि-जीवन को झूठे इतिहास से बचाना हम सबका पुनीत कर्त्तव्य है। आर्य युवक भ्रम भञ्जन के लिए सजग हों।

ऋषि जीवन से जुड़ी नई सामग्रीः- डॉ. धर्मवीर जी तथा ओम मुनि जी राजस्थान के पुराने परिवारों से कुछ अलभ्य स्रोत खोज कर लाये हैं। इनमें मेवाड़ राज्य में ऋषि की वसीयत के कागज भी हैं। इनमें परोपकारिणी सभा के नियम आदि भी हैं। कुछ पृष्ठ उर्दू में लिखे हैं। तीन चार मास बाद अजमेर जाकर इन सबकी शब्दशः जाँच करूँगा। उपरोक्त भ्रम का भञ्जन इस दस्तावेज से भी होता है। हदीस फैलाना तो सरल है, परन्तु उसे प्रमाणित करना कठिन होता है।

थियोसाफ़िकल की पोलः- आर्य विद्वानों ने आल्काट महोदय व मैडम ब्लैवट्स्की की अच्छी पोल खोली है। ऋषि के घोर निन्दक लाला जीयालाल जैनी ने भी इनके झूठ व ठगी पर सप्रमाण प्रकाश डाला है, फिर भी कुछ महानुभाव कर्नल व मैडम को ऋषि का प्रशंसक व भक्त बताते नहीं लजाते। इस मानसिक रोग की औषधी उन्हें कौन पिलावे? श्री हरबिलास शारदा जी ने इस विषय पर

बहुत विस्तार से अत्यन्त प्रामाणिक सामग्री दी है। इस विषय में श्री लक्ष्मण जी ने कुछ ऐसी सामग्री दी है जो किसी और ग्रन्थ में नहीं मिलती। हमने ग्रन्थ की पृष्ठ संख्या को ध्यान में रखकर लक्ष्मण जी लिखित सामग्री के आवश्यक अंश ही दिये।

लक्ष्मण जी ने कर्नल तथा मैडम के प्रथम बार लाहौर आगमन के समय की दो महत्त्वपूर्ण घटनायें दी हैं। तब नित्यप्रति ये दोनों लाला जीवनदास जी व राय मूलराज को प्रात: सायं मिलने जाते थे। आधी-आधी रात तक वहीं बातें किया करते। मैडम ने रायसाहब मूलराज को अपनी संस्था का सदस्य बनाकर उसे 'महात्मा' की उपाधि देने को कहा। जब कोई हमसे योग आदि विषयक प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए पत्र भेजेगा तो हम वह पत्र उत्तर के लिए आपको भेज देंगे। रायसाहब ने कहा, ''यदि मैं उत्तर न दे सका तो?'' तब मैडम ने कहा, ''हमें उत्तर क्या देना है, यह पत्र भी साथ ही आपको भेज दिया करेंगे।''

रायसाहब ने फिर भी मैडम की बात अस्वीकार कर दी। वह उनकी संस्था के सदस्य नहीं बने। तब मैडम ने निराश होकर कर्नल से कहा, ''लो! जिनके भरोसे कष्ट झेलकर हम इतनी दूर इस देश के सुधार के लिए आये, वही हम पर विश्वास नहीं कर रहे।'' लाला मूलराज इतना कहने पर भी उनके सदस्य न बने।

इससे प्रमाणित होता है कि ये दोनों तो ऋषि जी की लोकप्रियता का लाभ उठाकर अपना जाल फैलाकर शिकार को निकले थे। वे आर्यसमाज के लोगों को भी फँसाने का षड्यन्त्र रचकर बढ़ रहे थे। शीघ्र ऋषि ने उनकी सब कुचालें भाँप कर उन नास्तिकों, जादू-टोने, भूत-प्रेत में विश्वास करने वालों से आर्यसमाज के सम्बन्ध विच्छेद की घोषणा कर दी। हम ऐसा समझते हैं कि यह जानकारी ऋषि जीवन के पाठकों के लिए नई होगी।

श्री दयाल मुनि जी की खोज व चिन्तन:- हमारी यह उत्कट इच्छा रही कि ऋषि के आरम्भिक जीवन तथा गुजरात से जुड़ी घटनाओं के विषय में टंकारा में जन्मे माननीय ऋषि भक्त विद्वान् श्री दयाल मुनि जी की खोज व चिन्तन पर हिन्दी में एक अच्छी पुस्तक होनी चाहिये। इस कार्य को सिरे चढ़ाने के लिए प्रिय भावेश मेरजा एक उपयुक्त व्यक्ति हैं। इसी प्रयोजन से हमने उन्हें फोन किया तो दयालमुनि जी का कुशलक्षेम पूछते ही आपने स्वयं ही इस विषय की चर्चा छेड़ दी। यह सूचना पाकर हमें बहुत प्रसन्नता हुई। एक करणीय कार्य होने जा रहा है। इस पुस्तक के छपने से कई प्रश्नों का उत्तर मिल जायेगा। भ्रान्ति-निवारण के लिए यह एक उपयोगी पुस्तक होगी।

स्वराज्य संग्राम की दो घटनायें:- आर्य हिन्दू जाति आज भी अपने इतिहास की सुरक्षा में पूरी रुचि नहीं लेती। इस सेवक ने अभी-अभी श्रद्धेय आचार्य उदयवीर जी की जीवनी सतत साधना में भारत के स्वराज्य संग्राम की कई घटनाओं का अनावरण किया है। जलियाँवाला हत्याकाण्ड की देशवासी तथा आर्यसमाजी चर्चा तो बहुत करते हैं, परन्तु परोपकारी में यह जानकारी दी गई कि इसी हत्याकाण्ड का एक कारण स्वामी भूमानन्द जी का भाषण था, इसीलिए उन्हें फाँसी का दण्ड सुनाया गया, फिर यह दण्ड लम्बी कैद में बदल दिया गया।

आर्यसमाज ने यह बिन्दु उठाया ही नहीं। यत्न करके जलियाँवाला स्मारक भवन में स्वामी जी का फोटो लगवाया जा सकता है। स्वामी जी के चित्र की खोज होनी चाहिये। चित्र मिल जायेगा। एतद्विषयक सब सामग्री हम जुटा देंगे।

छात्रों पर अकारण अत्याचार:- इतिहास लेखक उस समय छात्रों पर ढाये गए अत्याचारों की घटनायें कभी देते ही नहीं। वैद्य गुरुदत्त जी ने अपने संस्मरणों में अपने गृह नगर की दो विशेष घटनायें दी हैं। गोराशाही ने लाहौर के दो कॉलेजों के प्रिंसिपलों को एक विचित्र आज्ञा दी कि अपने-अपने कॉलेज से सत्तर-सत्तर विद्यार्थियों को कॉलेज से निकाल दें। विद्यार्थियों के नाम नहीं बताये गये। कोई से भी सत्तर छात्र निकाल दिये जायें। आतंक फैलाना सरकार का प्रयोजन था। दयालसिंह कॉलेज के प्रिंसिपल ने इस आज्ञा को मानने से इंकार कर दिया।

उसने अपना त्याग-पत्र तथा मार्शल -ला अधिकारी का आदेश-पत्र अपनी कमेटी को भेज दिया। कमेटी ने क्या कहा- यह पता नहीं, परन्तु एक भी छात्र कॉलेज से निकाला नहीं गया। प्रिंसिपल हेमराज का त्याग-पत्र भी कमेटी ने स्वीकार नहीं किया। दो मास के पश्चात् जब छात्रों की लाहौर छावनी में हाजिरी समाप्त हुई, तब वही लाला हेमराज दयालसिंह कॉलेज के प्रिंसिपल थे।

डी.ए.वी. कॉलेज के प्रिंसिपल ने कमेटी से पूछा, ''क्या किया जावे।'' कमेटी ने दूरदर्शी बनकर सरकार से निकाले जाने वाले छात्रों के नाम पूछे तो घनी सयानी सरकार ने कहा कि किन्हीं सत्तर लड़कों को जिन्हें चाहो निकाल दो। डी.ए.वी. कॉलेज वालों ने लड़कों का उपस्थिति रजिस्टर लेकर सत्तर छत्तर के नाम पर काँटा लगा दिया। कमेटी ने यह निर्णय किसके दबाव में लिया, पाठक यह

जानने के लिए वैद्य गुरुदत्त जी की आत्मकथा अवश्य पढ़ें।[२]

देश को स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए क्या-क्या अत्याचार सहने पड़े- यह उसी का एक उदाहरण है।

अलभ्य स्रोतों का लाभ उठायें:- युग का प्रवाह ही कुछ ऐसा है कि पढ़े-लिखे युवक-युवतियाँ लेपटॉप को ही ज्ञान प्राप्ति के लिए सब कुछ मान बैठे हैं। हमारे बहुत से उत्साही युवक भी नेट पर दूसरों से सम्पर्क करके ही स्वयं को पं. धर्मभिक्षु जी, पं. शान्तिप्रकाश की पंक्ति का मिशनरी समझने की भूल करते हैं। साधन तो साधन ही हैं। व्यक्तिगत सम्पर्क, मेलजोल, घूम-घूम कर प्रचार का स्थान ये साधन नहीं ले सकते। इनका लाभ अवश्य उठाया जावे।

स्वामी जगदीश्वरानन्द जी के, दीक्षानन्द जी के पुस्तकालय का हिण्डौन तथा साहिबाबाद में जाकर क्या किसी ने लाभ उठाया? म.प्र. से स्वामी सूर्यानन्द जी का पुस्तकालय, सोनीपत से श्री रामचन्द्र जी आर्य का पुस्तकालय परोपकारिणी सभा को प्राप्त हो चुका है। सेवक ने भी बहुत से अलभ्य स्रोत, पत्र-पत्रिकायें व पुस्तकें सभा को अजमेर पहुँचा दी हैं। ऋषि उद्यान में पूरा वर्ष आर्य जन जाते रहते हैं। कार्यक्रम चलते रहते हैं। सभा के किसी अधिकारी की देखरेख में इन स्रोतों का गवेषक युवक लाभ उठा सकते हैं। जितने स्रोत इस समय अजमेर में हैं, इतने किसी आर्य सामाजिक सभा संस्था के पास नहीं हैं। अभी और दस्तावेज अजमेर पहुँचेंगे। युवक विद्वान् आगे निकलकर इन पर कार्य करें।

भारतीय जी ने नेनूराम ब्रह्मभट्ट की चर्चा करते हुए लिखा है कि वह जोधपुर से ऋषि के साथ अजमेर आया था। जिस लेख का आधार लेकर यह भ्रामक बात लिखी गई है, वह विवादास्पद लेख पहले सरस्वती में छपा था। सरस्वती की फाईल अजमेर में पहुँच चुकी है। उसमें इस लेख को तभी चुनौती दी गई थी। हरबिलास जी, जेठमल सोढा तथा तत्कालीन 'आर्य समाचार' मासिक के अनुसार **ब्रह्म भट्ट ऋषि के साथ अजमेर नहीं आया था।** भारतीय जी ने एक लेख में नन्ही को वेश्या नहीं माना और साथ-ही-साथ एक पुस्तक में उसे कई बार वेश्या लिखा है। उनकी कुछ तो मजबूरी होगी जो बार-बार नन्ही की पावनता की दुहाई देते हैं।

गणेश जी की उत्पत्ति तथा पुराण:- प्रधानमन्त्री मोदी जी ने गणेश की आकृति को प्लास्टिक सर्जरी बताया है। ऐसा समाचार पत्रों में छपा है। हम जानना चाहेंगे कि पौराणिक धर्मगुरु मोदी जी के मत पर क्या प्रतिक्रिया देते हैं? हम चाहेंगे कि सर्जरी की बात मानें तो पुराणों में गणेश जी की उत्पत्ति की कहानी का फिर क्या बनेगा? प्लास्टिक सर्जरी जिसकी हुई, उसमें देवत्व क्या हुआ? उसकी पूजा कैसे? वह विघ्ननाशक हो सकता है क्या?

सच कह दूँ अय बिरहमन, गर तू बुरा न माने।
तेरे सनमकदे (बुतखाने) के बुत हो गये पुराने।।

सन्दर्भ

१. द्रष्टव्य 'ऋषि दयानन्द सरस्वती- पत्र और विज्ञान' द्वितीय संस्करण - पृ. १

२. द्रष्टव्य 'भाव और भावना' लेखक- वैद्य गुरुदत्त, पृ. ७३-७४

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचना चाहिये।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक बचत खाता (**Savings**) संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम- **आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने,
जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक बचत खाता (**Savings**) संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	वेद संहिताएँ-- (केवल मन्त्र)	
१.	ऋग्वेद संहिता (मूल) मन्त्र-- वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	रु. ६००.००
२.	"यजुर्वेद संहिता" (मूल) मन्त्र वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	१८०.००
३.	यजुर्वेद संहिता (मूल) सजिल्द (साधारण)	१००.००
४.	सामवेद संहिता (मूल) मन्त्र वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	१६०.००
५.	अथर्ववेद संहिता (मूल) मन्त्र-- वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	४००.००
६.	चतुर्वेद विषय सूची	४०.००
७.	सामवेद के मन्त्रों की वर्णानुक्रमणिका	२.००
८.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सजिल्द	१२०.००
९.	ऋग्वेद के प्रथम बाईस मन्त्रों का भाष्य	५.००
	वेद भाष्य--(संस्कृत एवं हिन्दी, दोनों में भाष्य)	
१०.	ऋग्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१५०.००
११.	ऋग्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१२.	ऋग्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१३.	ऋग्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
१४.	ऋग्वेदभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	२५०.००
१५.	ऋग्वेदभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	३००.००
१६.	ऋग्वेदभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१७.	ऋग्वेदभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१८.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल प्रथम भाग सजिल्द	७०.००
१९.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	६०.००
२०.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल पहला भाग सजिल्द	
२१.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल दूसरा भाग सजिल्द	
२२.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	१५०.००
२३.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द	३००.००
२४.	ऋग्वेदभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	२००.००
२५.	ऋग्वेदभाष्य दसवाँ मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	९०.००
२६.	यजुर्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
२७.	यजुर्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५०.००
२८.	यजुर्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२५०.००
२९.	यजुर्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
	वेद भाषाभाष्य -- (केवल हिन्दी भाष्य)	
३०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य का नमूना	५.००
३१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
३२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	२५.००
३५.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	३०.००
३६.	ऋग्वेदभाषाभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	३०.००
३७.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३८.	ऋग्वेदभाषाभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३९.	ऋग्वेदभाषाभाष्य (नवाँ भाग) सप्तम मण्डल पहला भाग (सजिल्द)	२५.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
४०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सप्तम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	३५.००
४१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य अष्टम मण्डल (सजिल्द)	
४२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य नवम मण्डल (सजिल्द)	
४३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	४५.००
४४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	५०.००
४५.	यजुर्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१००.००
४६.	यजुर्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३७५.००

स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक विद्यामार्तण्ड

४७.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (पूर्वार्चिक)	
४८.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (उत्तरार्चिक) (दोनो खण्डों का सम्मिलित मूल्य)	४००.००
४९.	अथर्ववेदभाष्य – (काण्ड १ से २०) तीन भाग का एक सेट	१५००.००

विविध

५०.	गोकरुणानिधि (बढ़िया)	५.००
५१.	स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश	५.००
५२.	स्वीकारपत्र	३.००
५३.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (हिन्दी)	५.००

सिद्धान्त ग्रन्थ

५४.	सत्यार्थप्रकाश (सजिल्द बढ़िया)	१००.००
५५.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार सजिल्द)	३०.००
५६.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार अजिल्द)	७.००
५७.	आर्याभिविनय (गुटका अजिल्द)	७.००

कर्मकाण्डीय

५८.	वैदिक नित्यकर्मविधि	२५.००
५९.	पञ्चमहायज्ञविधि	१२.००
६०.	विवाह–पद्धति	२०.००
६१.	संस्कारविधि (सजिल्द)	७०.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
६२.	हवनमन्त्राः (बड़ा आकार)	५.००

पाखण्ड–खण्डन और शंका–समाधान ग्रन्थ

६३.	अनुभ्रमोच्छेदन	
६४.	भ्रमोच्छेदन (साधारण)	४.००
६५.	भ्रमोच्छेदन (बढ़िया)	१०.००
६६.	भ्रान्तिनिवारण	
६७.	शिक्षापत्रीध्वान्त–निवारण (स्वामीनारायण मतखण्डन)	२.००
६८.	वेदविरुद्धमत–खण्डन	१०.००
६९.	वेदान्तिध्वान्तनिवारण	२.००
७०.	शास्त्रार्थ काशी	८.००
७१.	शास्त्रार्थ हुगली (प्रतिमा–पूजन विचार)	६.००
७२.	सत्यधर्म विचार (मेला चान्दापुर)	७.००
७३.	शास्त्रार्थ जालंधर	३.००
७४.	शास्त्रार्थ अजमेर	३.००
७५.	शास्त्रार्थ बरेली (सत्यासत्य विवेक)	८.००
७६.	शास्त्रार्थ मसूदा	५.००
७७.	शास्त्रार्थ उदयपुर	४.००
७८.	शास्त्रार्थ फिरोजाबाद	१०.००
७९.	महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ (सजिल्द)	४०.००

शिक्षा व व्याकरण ग्रन्थ (वेदाङ्ग प्रकाश)

८०.	वर्णोच्चारण शिक्षा	१२.००
८१.	सन्धिविषय	४०.००
८२.	नामिक	
८३.	कारकीय	१०.००
८४.	सामासिक	४०.००
८५.	स्त्रैणताद्धित	
८६.	अव्ययार्थ	५.००
८७.	आख्यातिक (अजिल्द)	१५०.००

शेष भाग अगले अंक में.......

ऊमर काव्य

- ऊमरदान लालस

राजस्थान के गौरव राजस्थानी भाषा के कवि उमरदान जी का अमर काव्य हमें परोपकारिणी सभा के सम्माननीय सदस्य डॉ. खेतलखानी जी की कृपा से प्राप्त हुआ। इस पुस्तक का तीसरा संस्करण १९३० में प्रकाशित हुआ था। इसमें उमरदान जी की अनेक रचनाओं का संग्रह है। इस पुस्तक के पृष्ठ संख्या ६० से ९४ तक 'दयानन्द री दया' नाम से उनकी रचना प्रकाशित है। कवि और काव्य दोनों ही महत्त्वपूर्ण होने से पाठकों के लाभार्थ दयानन्द दर्शन को प्रकाशित कर रहे हैं। यह एक इतिहास का भाग है। पाठक लाभ उठा सकेंगे।

- सम्पादक

पिछले अंक का शेष......

[illegible] [illegible] पुराण माँयँ डटणो[1] नहिँ पाई.
[illegible] री जड़ता जड़ नें गरज[2] गमाई ।
[illegible][3] कर चटका[4] चटका बिहँस[5] बगाई[6],

१—[illegible]रना । २—गर्जना करके । ३—यह ईसाइयों की [illegible] पुस्तक है । बाइबिल के मायने पुस्तक के हैं । इसके दो [illegible] हैं एक नया और दूसरा पुराना । कुल १२ पुस्तकें हैं [illegible] को "इनजील" कहते हैं और कुल पुस्तक को [illegible] । इस पुस्तक में हजरत ईसा मसीह (जीसस [illegible]) के उपदेशों का संग्रह है जिनको ईसा के देहान्त के बाद उसके चेलों ने संग्रह किया । ईसा मसीह के १२ [illegible] चेले थे । ईसा का जन्म अब से करीब दो हजार वर्ष पूर्व [illegible] देश में जोरडिया शहर के पास बैथलम ग्राम में हुआ । [illegible] माता मरियम कुमारी थी जिसकी सगाई यूसफ नाम के [illegible] (खाती-सुतार) से हुई थी । कंवारी (अविवाहिता) के गर्भ से ही ईसामसीह पैदा हुए । जैरूसलम के यहूदी राजा ने ईसा के उपदेशों का विरोध कर उसे सूली पर चढ़ा दिया । ईसाई [illegible] का कोई नया सिद्धान्त नहीं है । ये मत बौद्ध धर्म और यहूदी [illegible] के आधार पर बना है । ईसामसीह की शिक्षा-दीक्षा भारत-[illegible] तिब्बत में बौद्धों के मठों से हुई थी । इसी ईसामसीह के [illegible] (वि० सं० ५७ फागुण बदि ३ शनौ) से ईसवी सन (ता० १ जनवरी सन् १ ई०) प्रारम्भ माना जाता है जो रोम (इटली) के एक विद्वान पादरी ने चलाया था । इस मत में कई [illegible] हैं जिन में रोमन कैथलिक (मूर्तिपूजक) और प्रोटेस्टेन्ट (मूर्ति विरोधी) मुख्य हैं । ४—टुकड़ा । ५—हँस करके । ६—फैंकदी ।

अटबट[1] कुरान[2] की छान रु छार उड़ाई ॥

१—ऊटपटांग । २—मुसलमानों का मुख्य धर्मग्रन्थ "कुरान" जिसका अर्थ है—पढ़ना, एकत्र करना। ये पुस्तक मुसलमान लोग खुदा से फरिश्ते जब्रील के जरिये मुहम्मद साहब पर मक्के और मदीने में उतरी हुई मानते हैं। हजरत मुहम्मद, पढ़े लिखे बिलकुल नहीं थे परन्तु देशाटन व सत्संग से अनुभवी होगये थे। इनका जन्म वि० सं० ६२७ (ई० स० ५७०) में मक्के के पुजारियों के घराने में हुआ। उस समय मक्का में मूर्ति-पूजा का बड़ा जोर था। मुहम्मद ने ईश्वर के एक होने तथा केवल उसी की उपासना करने का प्रचार और मूर्ति का खंडन किया। अरब लोगों ने उनका कट्टर विरोध किया, परन्तु वे अपने मार्ग पर अटल रहे। विरोधियों ने उन्हें इतना सताया कि सं० ६७६ में वे तुरन्त मक्का छोड़कर मदीने चले गये। इसी समय (यानी वि० सं० ६७६ सावण सुदि २ बुध ता० १५—७—६२२ ई०) से मुसलमानी संवत् (हिजरी सन १ ता० १ मोहर्रम) का आरम्भ होता है। कुरान में पैगम्बर मुहम्मद साहब की जीवनी है और इसके सिद्धान्त व कथाएँ पारसी, यहूदी और ईसाई मत से मिलती जुलती हैं। ये पुस्तक मुहम्मद के जीवन काल में नहीं बनी। मुहम्मद के मुँह से सुनी सुनाई आयतों (वाक्यों) को उनके समकालीन लोगों ने बाद में लिख डाली। मुहम्मद ने अपने प्रचार के लिए १२ मनुष्यों की एक टोली बनाई। सं० ६८६ (ई० स० ६३२) में ६३ वर्ष की आयु में मुहम्मद साहब का देहान्त हो गया। खलीफा अबूबकर (सं० ६८६ ६९१ वि०) ने कुरान के जुदे जुदे हिस्सों को एक किताब के रूप में लाने की योजना की। अबू के मरने पर जब कुरान में गड़बड़

दोहा

एकहि बेद अनादि है, आधुनीक[1] है अन्य[2]।
धर्म धुरन्धर धीरधर धन्य धन्य तूँ धन्य ॥

बसुधा[3] बिच बंके[4] बंकी[5] बात बिथारी[6] ॥आ०॥८
पाखंड खंड दब दंड अखंड[7] पुजायो,
धरनी तल को बल बंड[8] प्रचंड धुजायो[9] ।
छल छंट[10] त्रितंडन[11] दंड वितंड छुड़ायो,
आर्यन कुल-मंडन मंड अफंड[12] उड़ायो ॥

होने का सुना तो खलीफा उस्मान ने अबूबकर वाली प्रति से एक प्रति ठीक कराई और बाकी सब प्रतियाँ कुरान की जला दी गईं। अतः खलीफा उस्मान का ही ठीक कराया हुआ कुरान अब सारे संसार में चालू है और कुछ लोगों के सिवा, बाकी सब इसको सम्पूर्ण "कुरान शरीफ" मानते हैं। इसमें ११४ सूरतें (अध्याय), कुल अक्षर ३,२३,६७१ हैं। कई सारे का सारा "कुरान" कंठस्थ कर लेते हैं जो "हाफिज" कहलाते हैं। मुसलमानी धर्म्म में ७२ सम्प्रदाय (फिरके) हैं जिसमें "सुन्नी" और "शिया" मुख्य हैं। सुन्नी मुसलमानों का कहना है कि कोई शिया मुसलमान न आज तक हाफिज हुआ है और न आयन्दा में हो सकेगा। १—नये, आजकल के। २—दूसरे। ३—पृथ्वी। ४— बांका। ५—शानदार। ६—फैलाई। ७—एक ईश्वर। ८—जोरदार। ९—हिलाया। १०—छांटना। ११—पाखंडी। १२—स्वांग।

कात्यायन श्रौतसूत्र का अध्यापन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर के महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल में वर्षों से संस्कृत व्याकरण और दर्शनों का अध्यापन कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। इसी क्रम में महर्षि कात्यायन द्वारा प्रणीत **श्रौतसूत्र** (आचार्य कर्क भाष्य सहित) का **आचार्य शक्तिनन्दन मीमांसा तीर्थ** द्वारा १ जुलाई २०१५ से विधिवत् नियमित रूप से अध्यापन कराया जाएगा।

सूत्र ग्रन्थों में प्रसिद्ध **श्रौतसूत्र** ग्रन्थ कर्मकाण्ड को ही मुख्यत: प्रतिपादित करता है, अत: जो कर्मकाण्ड विषयक जिज्ञासु हैं, उनके लिए विशेष उपयोगी है। यह ग्रन्थ २६ अध्यायों में विभक्त है। आधुनिक काल में हम पञ्चमहायज्ञों तक ही सिमट कर रह जाते हैं, पर इस शास्त्र के अध्यापन से अन्य अनेक यज्ञ, जैसे- दशपूर्णमास-चातुर्मास्यादि का स्वरूप समझने का अच्छा अवसर प्राप्त होगा। यह ग्रन्थ लगभग ६ मास में सम्पूर्ण हो जाएगा।

इस काल में ऋषि उद्यान में प्रतिदिन यज्ञोपरान्त उपदेश व प्रवचन का लाभ भी प्राप्त हो सकेगा तथा विभिन्न समयों पर विविध विषयों पर विद्वानों द्वारा कक्षाएँ भी होती रहेंगी। ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास और भोजन व्यवस्था नि:शुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार सहयोग कर सकते हैं। माताओं व बहनों के निवास की व्यवस्था पृथक् रहेगी।

सम्पर्क सूत्र - स्वामी विष्वङ् परिव्राजक- ०९४१४००३७५६ **समय**- सायं ५.३० से ६.०० बजे तक।

पता - ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर-३०५००१ (राज.)

email : psabhaa@gmail.com

वैदिक साहित्य पर विशेष छूट

दानी महानुभावों के विशेष सहयोग से वैदिक पुस्तकालय, अजमेर द्वारा प्रकाशित रु. १६३५/- मूल्य की निम्नलिखित पुस्तकों का एक सैट ग्राहकों को आधे मूल्य (५० प्रतिशत) में अर्थात् रु. ८१७/- में दिया जा रहा है। पुस्तकों को डाक द्वारा मँगाने पर डाक व्यय के रु. १८३/- अतिरिक्त सहित कुल राशि रु. १०००/- में ग्राहकों को देय होगा।

पुस्तकों के सैट उपलब्धता रहने तक प्राथमिकता के आधार पर देय होंगे।

क्र. सं.	**पुस्तक सं.**	**पुस्तक का नाम**	**मूल्य**
१.	१२	ऋग्वेद भाषा भाष्य-१२ पुस्तक-१ सैट	६१०.००
२.	२	यजुर्वेद भाषा भाष्य-२ पुस्तक-१ सैट	४७५.००
३.	३	दयानन्द ग्रन्थमाला-३ पुस्तक- १ सैट	५५०.००
	१७	**योग**	**१६३५.००**

पुस्तकें मँगाने हेतु धनराशि-एम.ओ., डिमाण्ड ड्राफ्ट या ऑनलाईन द्वारा

खातेदार-वैदिक पुस्तकालय, अजमेर

बचत खाता संख्या- 0008000100067176,

बैंक- पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर

आई.एफ.एस.सी. संख्या PUNB 0000800 के माध्यम से भेज सकते हैं।

तर्क के बिना कोई भी विद्या किसी मनुष्य को प्राप्त नहीं होती और विद्या के बिना पदार्थों से उपयोग भी कोई नहीं ले सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५६

भारत का गुमनाम भेदिया- पं. रुचिराम

- राजेन्द्र जिज्ञासु

श्री पं. रुचिराम जी की चर्चा परोपकारी में यदा-कदा होती ही रहती है। उनके जीवन पर परोपकारी सार रूप में विशेष प्रामाणिक प्रकाश डाल रहा है। सविस्तार कभी फिर लिखा जायेगा। **इतिहास के हस्ताक्षर स्तम्भ** परम्परा में इस अंक में उनका एक पत्र दिया जा रहा है। कुछ और पत्र भी देने का प्रयास किया जावेगा।

पं. रुचिराम जी का जन्म पश्चिमी पंजाब के मुस्लिम बहुल अत्यन्त पिछड़े क्षेत्र जिला मियांवाली में हुआ। आपके जन्म के समय सन् १९०५ में बंग भंग आन्दोलन के कारण बहुत रोष-जोश व उथल-पुथल थी। मैट्रिक करने के पश्चात् आपने श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय में प्रवेश पाकर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, स्वामी वेदानन्द जी के चरणों में बैठकर धर्म रक्षा व देश सेवा के पाठ पढ़े। आर्यजन को यह भ्रान्ति है कि पण्डित जी विद्यालय में पढ़ाई में असाधारण छात्र थे। पं. रामचन्द्र जी (स्वामी सर्वानन्द जी), पं. शान्तिप्रकाश जी, पं. शिवदत्त जी तब आपके घनिष्ठ मित्रों में से थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने आपकी तीक्ष्ण बुद्धि, कार्य क्षमता, ऊहा व दक्षता को पहचाना। एक दिन चार आने की तुर्की टोपी पहनाकर आपको भेदिया बनाकर एक अतिकठिन कार्य सौंपा। भाई परमानन्द आदि सब नेता यह देखकर दंग रह गये कि २४ घण्टे में इस गुप्तचर ने वह कार्य कर दिखाया।

पूज्य गुरुवर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की आज्ञा से आप अरब देशों में सात वर्ष प्रचार करके सन् १९३६ में लौटे। हैदराबाद आर्य सत्याग्रह की अभूतपूर्व विजय में आपका अद्वितीय योगदान था। वहाँ भी आपने भेदिये का कार्य किया। श्यामभाई के बलिदान पर बीदर जेल से उनका शव प्राप्त करवाना आप ही के साहस, शौर्य व नीतिमत्ता का चमत्कार था।

कश्मीर को हड़पने के लिए पाकिस्तान ने आक्रमण किया तो भारत सरकार ने सेना के लिए भेदिये के रूप में आपकी सेवायें प्राप्त कीं। सन् १९६५ में भारत पाक युद्ध में भी आपने पाकिस्तान में रहकर भेदिये का कार्य किया। आपकी शौर्य गाथा बड़ी रोचक तथा अनूठी है।

इन्दिरा गाँधी जी के समय तो बाँग्लादेश में भेदिये के रूप में रहकर जो कुछ किया, वह गौरव गाथा एक निराला इतिहास है। भेदिये के रूप में आपका छद्म नाम हाजी हकीम गुलाम मही उद्दीन था। वह चाहते तो बहुत सम्पदा पा सकते थे। भारत के बड़े-बड़े नेता यथा डॉ. श्यामप्रसाद मुखर्जी, लौह पुरुष सरदार पटेल, लाल बहादुर शास्त्री, श्रीमती इन्दिरा गाँधी आपकी बुद्धि पर मुग्ध थे। आर्यसमाज में महाशय कृष्ण, लाला देशबन्धु गुप्त, घनश्यामसिंह गुप्त, पं. नरेन्द्र, भाई वंशालाल इन्हें बहुत आदर देते थे।

पं. रुचिराम जी के जीवन की सब घटनायें तो पुस्तकों में नहीं दी जा सकतीं परन्तु फिर भी विस्तार से कुछ लिखूँगा। सब सामग्री मेरे हृदय में सुरक्षित है।

-अबोहर, पंजाब

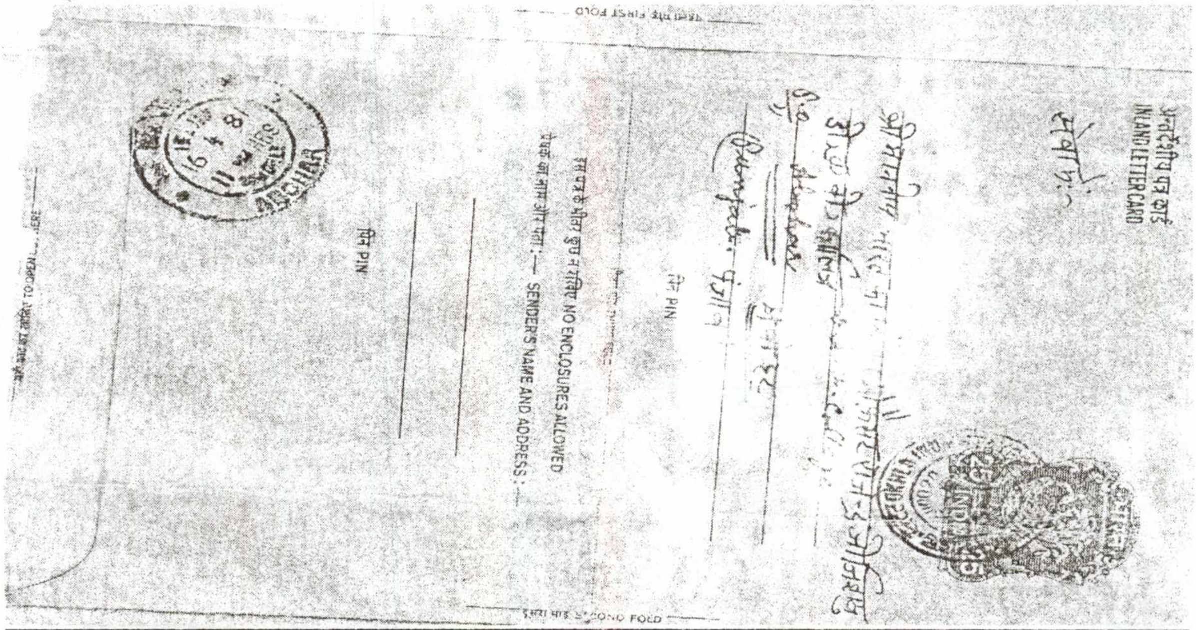

ओ३म् हरकेश नगर

तिथि 13/4/81

श्रीमान देश, धर्म, तथा जाति रक्षक
भारत का सितारा माननीय
प्रोफ़ेसर राजेन्द्र जी जिज्ञासु महोदय!

नमस्ते, सेवा में निवेदन है, कि जब मैं यह पत्र आप की सेवा में लिख रहा हूँ, आँखों में आँसू आ रहे हैं, मैं बहुत अभागा हूँ, कि अपने पूज्य आचार्य श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की स्मृति समारोह में भी न जा सका मैं बहुत बीमार रहता हूँ, कमजोरी के कारण चल फिर नहीं सकता, परन्तु डाक्टर लोग कहते हैं ज्यों २ गर्मी पड़ेगी, त्यों २ तुम अच्छे होते जाओगे, बुखार तो अब उतर चुका है, टांगों में अब कुछ चलने की ताकत आने लगी है, भूख भी खूब लगने लगी है, दिल में बार २ यह विचार आता है, कि मैं कब अच्छा होंगा, कब प्रचार कार्य में लग सकूंगा, आज कल कमर तथा टांगों में दर्द रहता है॥

मैं आज एक पत्र परमहंस परिव्राजक पूज्य आचार्य श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की सेवा में भी लिख रहा हूं।

मेरी ओर से उन महानुभावों की सेवा में नमस्ते, पुरी के श्री प्रेमप्रकाश जी आर्य, तथा श्री पुरुषोत्तमलालजी तथा सब की नमस्ते।

बरनाला के श्री जगदीश राम जी आर्य, तथा श्री तीर्थराज जी सिन्धवानी तथा सब की सेवा में नमस्ते।

आशा है, आप कृपा दृष्टि बनाये रखेंगे॥

भवदीय शुभ चिन्तक

रुचिराम आर्योपदेशक

हरकेश नगर, (ओखला टैंक)

P.O. (C.R.R.I)

नई दिल्ली - 20

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यो को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३१ मई २०१५ तक)

१. स्वामी नित्यानन्द, देहरादून, उत्तराखण्ड २. श्रीमती पुष्पा लोढ़ा, अजमेर ३. श्री मुरलीधर/ श्री बालमुकुन्द परवाल, अजमेर ४. श्रीमती सुनीता रानी, हरियाणा ५. श्री चन्द्रसेन हरी सिमानी, अजमेर ६. श्रीमती मेहता माता, अजमेर ७. विद्यार्थी आर्ष गुरुकुल, माउण्ट आबू, राज. ८. श्री गोपाल सुथार, शिवगंज, राज. ९. श्री प्रभुलाल कुमावत, अजमेर १०. श्री रामनिवास, अलवर, राज. ११. आर्य समाज, सूर्या निकेतन,दिल्ली १२. श्री ताराचन्द, जोधपुर, राज. १३. श्री रामावतार, महेन्द्रगढ़, हरियाणा १४. श्री नानकचन्द प्रवीण कुमार तायल, फरीदाबाद, हरियाणा १५. श्री रामवीर चुगफलात, पन्चकुला, हरियाणा १६. श्री शम्भूलाल व श्रीमती चम्पादेवी साहनी, मुम्बई, महाराष्ट्र १७. श्री गौरव मिश्रा, अजमेर १८. श्री गोविन्दप्रसाद गुप्ता, गंगापुर सिटी, राज. १९. श्री रजनीश कपूर, दिल्ली २०. श्री सुरेन्द्रमोहन विकल, लुधियाना, पंजाब २१. श्री सुरेश कुमार आनन्द/श्रीमती सरिता आनन्द, नई दिल्ली २२. श्री आनन्द मुनि, हिसार, हरियाणा २३. डॉ. सुचेता फोफले, उमरगा, महाराष्ट्र २४. श्रीमती कमला देवी/श्री बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर २५. श्री राजाराम त्यागी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड २६. श्री किशोर काबरा, अजमेर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३१ मई २०१५ तक)

१. श्री कैलाशचन्द शर्मा, अजमेर २. श्रीमती सीतादेवी वर्मा, अजमेर ३. श्रीमती सुशीला देवी, अजमेर ४. श्रीमती पुष्पा लोढ़ा, अजमेर ५. श्रीमती सरला देवी सोनी, अजमेर ६. श्री जयकिशन आर्य, झज्जर, हरियाणा ७. श्री किशन नवाल, गुलाबपुरा ८. श्री चन्द्रसेन हरि सिमानी, अहमदाबाद, गुजरात ९. श्री रमेश मुनि, अजमेर १०. श्री बलवीर सिंह बत्रा, अजमेर ११. श्री रामेश्वरलाल शर्मा, अजमेर १२. श्री मयंक कुमार, अजमेर १३. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर १४. श्री हरनारायण, अजमेर १५. श्री राजकुमार/अनिल कुमार, अजमेर १६. जगतगुरु कृपालु महाराज, वृन्दावन मोबाइल १७. श्री गोपाल गोयल, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. १८. महिला मण्डल, गुलाबपुरा, भीलवाड़ा १९. श्री अतुल, अलवर, राज. २०. श्रीमती रामेश्वरी देवी, अजमेर २१. श्री कन्हैयालाल, अजमेर २२. श्रीमती कमला देवी/ श्री बद्रीप्रसाद, अजमेर ।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

नेपाल भूकम्प पीड़ित सहायतार्थ

(१६ से ३१ मई २०१५ तक)

१. श्री सुन्दर मौर्य/श्री पीयूष मौर्य, अजमेर २. श्रीमती उषा आर्या, अजमेर ३. श्री विजय सिंह/श्रीमती कंचन गहलोत, अजमेर ४. श्रीमती सुशीला देवी, अजमेर ५. श्रीमती मेहता माता, अजमेर ६. श्रीमती लक्ष्मी काकी, अजमेर ७. श्री नन्दकिशोर आर्य, अजमेर ८. श्रीमती रचना चौधरी, अजमेर ९. श्री पृथ्वीराज राठौड़, अजमेर १०. श्री श्याम सिंह आर्य, अजमेर ११. श्री अमरचन्द, अजमेर १२. श्री आशीष विश्वकर्मा, अजमेर १३. श्री रामकिशन माली, अजमेर १४. श्री सांवरलाल, अजमेर १५. श्रीमती सावित्री माता, अजमेर १६. श्री वासुदेव आर्य/ श्रीमती कुमुदनी आर्या, अजमेर १७. श्री अमर सिंह आर्य, जयपुर, राज. १८. श्री वरदीचन्द गुप्त, जयपुर, राज. १९. श्री स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर २०. राजपूताना म्यूजिक हाऊस, अजमेर २१. श्री अनिल गुप्ता, अजमेर २२. श्री चिन्तन रामी, अहमदाबाद, गुजरात २३. श्रीमती शीला बहन रामी, अहमदाबाद, गुजरात २४. श्री ओमप्रकाश तंवर, नागौर, राज. २५. श्री किशन सिंह, अजमेर २६. डॉ. सुशीला मंगलानी, अबोहर, पंजाब २७. श्री रामचन्द्र ठेकेदार, रोहतक, हरियाणा २८. श्री गौरव मिश्रा, अजमेर २९. डॉ. आदिदेव, गोरखपुर, उ.प्र. ३०. श्री हेमन्त दुबे, होशंगाबाद, म.प्र. ३१. श्री सुभाष दुबे, होशंगाबाद, म.प्र. ३२. श्री राजाराम त्यागी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

परोपकारिणी सभा द्वारा किया जा रहा अनुसन्धान कार्य

- सत्येन्द्र सिंह आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा विक्रमी संवत् १९३९ में फाल्गुन कृष्ण पँचमी दिन मंगलवार (तदनुसार ई. सन् १८८३ की २७ फरवरी) को परोपकारिणी सभा की स्थापना की गई। महाराजाधिराज श्री सज्जनसिंह जी महाराणा, उदयपुर इसके अध्यक्ष बनाए गए। पदाधिकारियों सहित सभा के कुल सदस्यों की संख्या २३ रखी गई, जो आज भी २३ ही है।

सभा के तीन मुख्य कार्य ऋषिवर ने इस प्रकार निर्देशित किए थे-

(१) वेद, वेदाङ्ग एवं अन्य शास्त्रों के व्याख्या ग्रन्थ लिखे एवं प्रकाशित किये जाएँ तथा उनका अध्ययन, अध्यापन किया जाए।

(२) उपदेशकों, वक्ताओं का समूह बनाकर वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार भारत में एवं अन्य देशों में किया जाए जिससे असत्य का निराकरण एवं सत्य की स्थापना हो।

(३) भारत में असहायों की, दीन-दुखियों की रक्षा, सहायता एवं पोषण किया जाए।

सभा यह तीनों कार्य अपनी स्थापना के समय से ही करती आ रही है और अब भी कर रही है तथा पूर्व के वर्षों की अपेक्षा बेहतर ढंग से कर रही है। सभा संस्थाओं में जब उसके कर्णधार, उत्साही एवं पुरुषार्थी होते हैं, तो कार्य अच्छा और अधिक होता है और जब पदाधिकारी अन्यमनस्कता से काम करते हैं तो कार्य में न्यूनता और शिथिलता आ जाती है। उदाहरणार्थ परोपकारी मासिक पत्रिका का कार्य भार जब इसके वर्तमान सम्पादक प्रो. धर्मवीर जी ने सम्भाला था तो इसकी प्रसार संख्या मात्र चार-पांच सौ थी, जो अब बढ़कर पन्द्रह हजार से अधिक हो गयी है, पत्रिका मासिक से पाक्षिक हो गयी है, पृष्ठों की संख्या भी पहले की अपेक्षा अधिक है, कागज एवं मुद्रण पहले से अच्छा हैं, साज-सज्जा एवं उसमें प्रकाशित सामग्री की देश-विदेश में सर्वत्र प्रशंसा है।

अब अनुसन्धान कार्य की चर्चा करते हैं। ऋषि उद्यान अजमेर में जो सबसे पुराना भवन है वह 'सरस्वती भवन' के नाम से जाना जाता है। पिछले तीन दशकों में परोपकारिणी सभा ने ऋषि उद्यान का अभूतपूर्व विकास किया है। गोशाला के अतिरिक्त कई भव्य भवनों का निर्माण हुआ है जिनमें एक तीन-मंजिला (४५×९०) भवन अनुसन्धान भवन के नाम से जाना जाता है और उस पर अनुसन्धान विभाग का बोर्ड भी लगा है। उसी में परोपकारिणी सभा का आर्ष गुरुकुल चलता है। आर्य समाज के एक स्वनाम धन्य विद्वान् ने एकाधिक बार यह राग अलापा है कि सभा ने करोड़ों रुपये भवन बनाने में तो खर्च कर दिये, परन्तु अनुसन्धान कार्य कुछ नहीं किया। जब वे स्वयं सभा के ट्रस्टी थे और पदासीन भी थे तो ऋषि मेले के अवसर पर यहाँ आने वाले विद्वानों को रहने, स्नान करने आदि में बड़ी कठिनाई झेलनी पड़ती थी। वह कठिनाई सभा ने दूर कर दी। परन्तु यह उनकी दृष्टि में नहीं आता है।

स्नातकोत्तर कक्षा पास किसी छात्र/छात्रा को पुराने लेखकों के ग्रन्थों, लेखों, निबन्धों, व्याख्याओं में से डेढ़-दो सौ पृष्ठ छांटकर सामग्री कुछ आगे-पीछे (कटिंग-पेस्टिंग) करके शोध-प्रबन्ध के नाम पर एक पुस्तक तैयार कराने का नाम ही यदि शोध है, तो यह शोध तो परोपकारी सभा नहीं कर रही और इस दृष्टि से तो श्री पं. ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु, पं. भगवद्दत्त जी, स्वामी वेदानन्द जी (दयानन्द) तीर्थ, पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक आदि विद्वानों का जीवन भी व्यर्थ ही गया क्योंकि इन्होंने न ऐसा कुछ अनुसन्धान स्वयं किया और न कराया। सभा में पदाधिकारी रहते हुए ऋषि मेले के अवसर पर स्वयं यज्ञ के ब्रह्मा बनकर एक उच्च कोटि के वैदिक विद्वान् को वेद-पाठी बनाने का शोध कार्य? (वास्तव में प्रतिशोध) परोपकारिणी सभा वास्तव में नहीं कर रही और न ऐसा करना चाहिए।

परोपकारिणी सभा के अनुसन्धान कार्य निर्बाध गति से चल रहे हैं। जमायते इस्लामी अपने पत्र 'कान्ति' में जब वेद पर, ऋषि दयानन्द पर, आर्य समाज पर प्रहार करती है तो सारे भारत में राजधानी नई दिल्ली से लेकर दक्षिण तक आर्य समाज की सारी पत्र-पत्रिकाएँ, सभाएँ, नेतागण एवं अनुसन्धान कार्य के अलम्बरदार मौन साध जाते हैं। उत्तर देने के लिए ऊहा चाहिए, सही उत्तर खोजने के लिए सम्बन्धित ग्रन्थ पढ़ने ही होंगे, शोध कार्य करना ही पड़ेगा। परोपकारिणी सभा यह अनुसन्धान डंके की चोट पर करती

है और आक्षेपकर्ता को निरुत्तर करती है, परोपकारी पत्रिका में ये खोजपूर्ण लेख छपते हैं। संघ परिवार एक अफवाह संचार माध्यमों में प्रकाशित कराता है कि शास्त्रार्थ के पश्चात् स्वामी दयानन्द सरस्वती को एक पत्र तेलंग स्वामी (पौराणिक) ने लिखा था जिसके प्राप्त होने पर स्वामी दयानन्द काशी छोड़कर चले गए थे, मानों वे डरकर चले गए थे। अनुसन्धान का राग अलापने वाले तो चुप्पी लगा गए क्योंकि उत्तर देने के लिए डेढ़ शताब्दी पूर्व के इतिहास की परतें उधेड़नी पड़ती। परोपकारी पत्रिका में सभा ने ऐसा उत्तर दिया कि तेलंग स्वामी के वकीलों की बोलती बंद हो गयी। प्रसिद्ध वकील राम जेठमलानी ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम के विषय में अवांछनीय टिप्पणी कर दी। राम के नाम पर मन्दिर बनाने के बहाने हलवा-पूरी खाने वालों को तो उत्तर क्या सूझना था, आर्य समाजों में भी अनुसन्धान की डोंगी पीटने वालों ने चुप्पी साध ली। परोपकारिणी सभा ने ऐसा सटीक उत्तर दिया कि अब पौराणिक जगत् की बड़ी हस्तियाँ भी माँग कर रही हैं कि महाराज राम के जीवन पर ढाई-तीन सौ पृष्ठों का एक ग्रन्थ या तो डॉ. धर्मवीर जी स्वयं लिखें या अपने किसी विद्वान् से लिखवाएँ। यह सभा के अनुसन्धान कार्य का जादू नहीं है तो और क्या है। सभा ने ऐसा तंत्र बनाया है कि विरोधियों को सही उत्तर दिया जा सके। जादू वह जो सिर चढ़कर बोले।

जयपुर के आचार्य सियाराम दास नैयायिक ने इण्टरनेट पर २८-३० पृष्ठों की सामग्री महर्षि दयानन्द सरस्वती के विरुद्ध डाल दी। आर्य समाज में कुछ दिलजले, ऋषि-मिशन के दीवाने बेचैन हो गए कि इसका उत्तर दिया जाये, उन्होंने बहुतों से सम्पर्क किया परन्तु सब कन्नी काट गए। अनुसन्धान कार्य के ध्वजवाहक भी पता नहीं किस गुफा में छिप गए। अन्त में उसका उत्तर परोपकारिणी सभा के माननीय सदस्य और वैदिक वाङ्मय के प्रकाण्ड पण्डित श्री डॉ. वेदपाल जी ने परोपकारी पत्रिका में दिया। उत्तर बहुत शास्त्रीय प्रकृति का था।

परोपकारिणी सभा ऐसा अनुसन्धान कार्य कर रही है कि आर्यजन उसपर सदैव अपना सिर गर्व से ऊँचा रख सकते हैं।

ऋषि दयानन्द जी महाराज को अपशब्द कहने वालों में जियालाल जैनी कुख्यात हैं। उसकी लिखी पुस्तक 'दयानन्द छल कपट दर्पण' बहुत खोजने पर भी सारे भारत में किसी आर्य समाज के पुस्तकालय में न मिली। जब पुस्तक ही सामने नहीं है तो उत्तर कौन देवे। परोपकारिणी सभा के एक नौजवान ऋषि भक्त ने उस पुस्तक की एक प्रति खोज निकाली जो अब सभा की सम्पत्ति है। इस पुस्तक का सटीक उत्तर सभा के माननीय सदस्य और प्रसिद्ध इतिहासज्ञ प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने दिया है। उत्तर कई कारणों से प्रामाणिक है। जियालाल जैनी के ही एक साथी ने उसके छलकपट की पोलपट्टी खोली है। वह पत्र जिस पत्रिका में छपा था, वह भी प्रयत्नपूर्वक सभा ने प्राप्त कर लिया है और उसे अपनी पुस्तक में जिज्ञासु जी ने उद्धृत किया है। जियालाल जैनी की पुस्तक का उत्तर देने का कार्य अपने आप में एक विशद् शोध कार्य है जो सभा ने किया है। इस विषय में भी मोक्ष मार्ग के पथिक एक ऐसे अनुसन्धान विशेषज्ञ हैं जो महर्षि पर किये गए आक्षेपों के उत्तर देने को अनुचित मानते हैं। ऐसे पी.एच.डी. डिग्रीधारियों की योग्यता से आर्यसमाज को क्या मिलेगा। परोपकारिणी सभा, वेद, महर्षि दयानन्द और आर्य समाज पर किये जाने वाले वारों-प्रहारों का उत्तर देने के लिए अनुसन्धान कार्य करती है।

आर्य समाज वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानता है। केन्द्र सरकार योजनाबद्ध ढंग से चाल चल रही है कि गीता को राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित कर दिया जाए। यदि ऐसा हो गया तो वेद को आसानी से नेपथ्य में धकेला जा सकेगा। किसी अनुसन्धान कार्य करने, कराने वाले ने कही कोई आवाज न उठाई। परोपकारिणी सभा ने इस षड्यन्त्र का स्वतः संज्ञान लेते हुए तर्क और प्रमाण प्रस्तुत करते हुए इसका जोरदार प्रतिकार किया। इस प्रकार का उत्तर देने के लिए जो खोज करनी पड़ती है, स्वाध्याय करना पड़ता है, ऐसे शोध कार्य की भी महती आवश्यकता है। आर्यसमाज के अन्य संगठन, सभाएँ एवं विद्वान् इसको महत्त्व नहीं देते हैं परन्तु परोपकारिणी सभा यह कार्य निष्ठापूर्वक कर रही है।

अनुसन्धान का रोना रोने वालों की विस्मयकारी चुप्पीः- अभी कोई चार-पाँच वर्ष पूर्व दिल्ली में तीस हजारी कोर्ट में मुसलमानों ने एक वाद (मुकदमा) सत्यार्थप्रकाश के प्रकाशकों (सार्वदेशिक सभा, रामलीला मैदान, नई दिल्ली एवं गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली) के विरुद्ध दायर किया हुआ था। वाद भी ऐसा गम्भीर था कि उसमें प्रतिवादियों के विरुद्ध दर्ज कराई हुई प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफ.आई.आर.) भी शामिल थी। महर्षि जी के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में आर्यों एवं आर्यसमाज के प्राण बसते हैं। इस समाचार से आर्यसमाज

में हलचल मच गई। वादियों ने अपने वाद में कहा था कि- स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थप्रकाश के १४वें समुल्लास में कुरआन शरीफ की आयतों के जिस अर्थ के आधार पर समीक्षा की है, वे अर्थ कुरआन के किसी भाष्यकार ने नहीं किये हैं। जो लोग अनुसन्धान-अनुसन्धान की रट लगाते नहीं थकते, वे सब मौन साध गए। न्यायालय में वाद का उत्तर देने के लिए कोई सामने नहीं आया। हैदराबाद, मुम्बई, उदयपुर, भोपाल, नागपुर, नई दिल्ली- सर्वत्र सन्नाटा छाया रहा। सारे अनुसन्धान की पोल खुल गई। दिल्ली के नेताओं ने आर्यसमाज, १५, हनुमान रोड में एक बैठक बुलाई। प्रा. राजेन्द्र जी जिज्ञासु भी उस बैठक में गए एवं जाकर पीछे बैठ गए। नेतागण ललकारते रहे कि आर्यसमाज को एकजुट हो जाना चाहिए, कट्टरपन्थियों की बोलती बन्द करनी चाहिए परन्तु यह कैसे हो? इसका उत्तर किसी के पास नहीं था। तभी पं. हरिदेव जी (करौलबाग वाले) प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी की बाजू पकड़कर स्टेज पर लाये और उनसे इस विषय में विचार रखने के लिए कहा गया। जिज्ञासु जी (जो परोपकरिणी सभा के सम्मानित ट्रस्टी हैं) ने विनम्रतापूर्वक कहा कि न्यायालय में मैं वे ग्रन्थ प्रस्तुत कर दूँगा जिनके आधार पर यह मुकदमा खारिज हो जायेगा। सब नेता-गण एवं एक-आधा छुटभैया प्रकाशक जिज्ञासु जी को चिपट गए कि वह सामग्री हमें दे दो, हम आगे की कार्यवाही कर लेंगे। 'जिज्ञासु' जी ने दृढ़ता से कहा कि वे ऐसे प्रमाण एवं ग्रन्थ न्यायालय में ही उचित समय पर प्रस्तुत करेंगे, बतायेंगे किसी को नहीं। मुकदमा करने वालों के विरुद्ध ललकारने वाले ये नेता तथा अनुसन्धान न होने का विलाप करने वाले न्यायालय में किसी तारीख पर नहीं जाते थे। वहाँ तो वर्षा के मौसम में भी मुकदमें की तारीख पर परोपकारिणी सभा के सुयोग्य मन्त्री डॉ. धर्मवीर जी, सभा के ट्रस्टी प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी और पं. इन्द्रजित् देव जी पहुँचते थे। प्रतिवादी के नाते स्वामी अग्निवेश जी भी न्यायालय में जाते थे परन्तु जैसी आत्मीयता से वे वादियों (मुकदमा करने वाले इस्लाम मतावलम्बियों) से मिलते थे, उसे देखकर यह समझ पाना मुश्किल था कि वे कोर्ट में प्रतिवादी के रूप में आए हैं या वादियों के पक्ष में नैतिक समर्थन प्रदर्शित करने के लिए। वाद के दौरान ही प्रा. राजेन्द्र जी ने प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किये जाने वाले कुरआन के भाष्य की प्रति परोपकारिणी सभा को सौंपते हुए डॉ. धर्मवीर जी को कहा कि यह सभा की सम्पत्ति है। सभा के एक ऋषिभक्त युवा विद्वान् को उस सामग्री की पूरी जानकारी तथा आवश्यकता पड़ने पर उसे न्यायालय में प्रस्तुत करने का क्रम एवं विधि अत्यन्त गोपनीयता के साथ यह कहते हुए समझा दी कि यदि पं. लेखराम की तरह मेरा (जिज्ञासु जी का) बलिदान हो जाये या स्वाभाविक मृत्यु ही हो जाए तो आर्यसमाज के पास उसका विकल्प होना चाहिए। सभा के साथ जुड़े हुए ऊहावान् इतिहासज्ञ प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी के बल पर कोर्ट में आर्यसमाज की विजय हुई। परन्तु हठ एवं दुराग्रह के कारण सभा के द्वेषियों को यह खोजपूर्ण कार्य दिखाई ही नहीं पड़ता क्योंकि उन्होंने तो फतवा जारी कर रखा है कि परोपकारिणी सभा में अनुसन्धान कार्य नहीं हो रहा है।

ऋषि जीवन पर विशेष अनुसन्धानः- ऋषि जीवन पर मौलिक काम धर्मवीर पं. लेखराम जी ने, देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय ने, दीवान बहादुर हरबिलास शारदा ने किया। कई जीवनी लेखकों ने इन्हीं से सामग्री लेकर ऋषि के जीवन चरित लिखे परन्तु स्वयं कुछ विशेष खोज या पड़ताल नहीं की। इतने तक तो बात ठीक थी परन्तु कुछ लोगों ने ऋषि जीवन में प्रदूषण का काम (मिलावट-हटावट का काम) आरम्भ कर दिया। स्वाध्याय के प्रति रुचि कम होने के कारण साधारण पाठक को ऐसे प्रदूषण का पता नहीं चलता। परोपकारिणी सभा अपनी पत्रिका परोपकारी के माध्यम से ''कुछ तड़प-कुछ झड़प'' में इसके संकेत देती रहती है। ऋषि जीवनी में प्रदूषण करने वालों ने ऋषि को विष देने वाली वेश्या नन्हीं को नन्ही भगतन बना दिया। जोधपुर के राजघराने को महर्षि की हत्या में संलिप्त होने से साफ पाक बचाने के लिए शब्द-जाल बुना। परोपकारिणी सभा के सदस्य प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने उस सारे प्रदूषण की पोल पं. लक्ष्मण जी आर्योपदेशक लिखित ''महर्षि दयानन्द सरस्वती- सम्पूर्ण जीवन चरित्र'' हिन्दी संस्करण की अपनी पाद टिप्पणियों एवं लेखों में खोली है।

महर्षि के जीवन पर परोपकारिणी सभा का अनुसन्धान कार्य अनवरत रूप से चल रहा है। १९ वीं शताब्दी के अन्तिम तीन दशकों तथा २०वीं शताब्दी के प्रथम तीन-चार दशकों में तो महर्षि के जीवन विषयक लेख तथा विवरण आर्यसामाजिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे। भारत भर में आर्य समाज के पुस्तकालयों में तो उस सम्पदा को सम्भाल कर नहीं रखा गया परन्तु सभा ने ऐसी पत्र-पत्रिकाओं को सम्भाल कर रखा है। जो महत्वपूर्ण अंक उपलब्ध नहीं थे, उसकी जी-जान से खोज जारी रखी। आर्य दर्पण मासिक का फरवरी सन् १८८० का

अंक (जो परोपकारी के अप्रैल (प्रथम) २०१५ अक में छपा है) एक छोटा-सा उदाहरण है। परोपकारिणी सभा भारत में ही नहीं, विदेशों में भी ऋषि-जीवन विषयक अनुसन्धान कार्य कर रही है। अंग्रेजी में एवं अन्य विदेशी भाषाओं में ऐसी नवीन सामग्री सभा को प्राप्त हो रही है, जो ऋषि के किसी भी जीवन चरित में नहीं है और यह सामग्री इतनी मात्रा में है कि ढाई-तीन सौ पृष्ठों का एक ग्रन्थ बन जाएगा। कोई अनुसन्धान कर्त्ता अभी तक इसे नहीं खोज पाया। कुछ सामग्री तो ऋषि के जीवन काल की है तथा कुछ उसके तुरन्त बाद के वर्षों की है। जब सभा इस सामग्री को प्रकाशित करेगी तो ऋषि-प्रेमियों को आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता होगी। परोपकारिणी सभा यह कार्य अपने कई विद्वानों एवं ऋषि मिशन के दीवानों के द्वारा करा रही है।

महर्षि के वैदुष्य एवं वाग्मिता का प्रभाव उनके जीवन काल में ही विदेशों में भी इतना हो गया था कि एक विदेशी लेखक कहता है-

''भारत में एक विद्वान् पण्डित (जो सम्भवत: संस्कृत में सर्वाधिक विद्वान् हैं) इस समय वेद का भाष्य लिखने एवं प्रकाशित करने में लगा है, उसका नाम स्वामी दयानन्द सरस्वती है। उनका कथन है कि पिछले लगभग पाँच हजार वर्षों से वेद का पठन-पाठन नहीं हुआ है। उनकी मान्यता है कि चारों वेद अत्यन्त प्रारम्भिक काल में प्राप्त हुए।''

ईसा के देश में महर्षि की विद्वत्ता का डंका बज गया। इन पंक्तियों का मूल अंग्रेजी में इस प्रकार है-

"A Learned Pandit in India (Perhaps the most learned man in Sanskrit), Swami Dayanand Saraswati, who is now engaged in writing and publishing a commentary on The Vedas, states that" The Vedas have ceased to be objects of study for nearly five thousand years", and places the first appearance of The Four Vedas at an immense Antiqnity."

महर्षि के जीवन काल में ही विदेशी (जो ईसाई ही थे) उनके व्यक्तित्व एवं प्रभाव से कितने भयाक्रान्त थे, उसकी एक झलक देखिए-

''जहाँ कहीं स्वामी दयानन्द जाते हैं, उनके भव्य व्यक्तित्व, दृढ़ देह-यष्टि, वैदुष्यपूर्ण सहज प्रवचन, विद्युत की भाँति कड़कती वक्तृता एवं अकाट्य तर्कों के सामने विरोधी टिक नहीं पाता।''

इसका मूल अंग्रेजी पाठ इस प्रकार है-

"Wherever Swami Dayanand goes, his splendid physique, his manly bearing, his erudite discourses, his thundering eloquence and his incisive logic bear down all opposition."

सभा द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जीवन विषयक व्यापक अनुसन्धान कार्य पर सभा के कार्यकारी प्रधान माननीय प्रो. धर्मवीर जी आगामी वेद प्रचार यात्रा के दौरान गुजरात में अपनी वक्तृता में कुछ और प्रकाश डालेंगे।

- जागृति विहार, मेरठ

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

नेपाल त्रासदी में सहायता हेतु अपील
विश्व के एकमात्र हिन्दू राष्ट्र नेपाल को बचाइये

बन्धुओ,

आप जानते हैं कि नेपाल अभी तक एक मात्र हिन्दू राष्ट्र है। २५ अप्रैल २०१५ को आये भूकम्प ने नेपाल को पूरी तरह तहस-नहस कर डाला। इस प्राकृतिक आपदा ने लगभग ६६ लाख लोगों को प्रभावित किया है और १० से १२ हजार व्यक्ति काल के ग्रास बन चुके हैं। ५ लाख से अधिक लोग बुरी तरह से घायल हो चुके हैं। क्या घर, क्या मन्दिर, क्या दुकानें, क्या सड़कें, क्या होटल, क्या अस्पताल- सभी खण्डहर बन चुके हैं।

आर्यसमाज ने देश एवं मानवता पर आई ऐसी प्राकृतिक आपदाओं के समय सहायता करने में सदैव बढ़-चढ़ कर भाग लिया है। चाहे पिछले दिनों उत्तराखण्ड में आई बाढ़ हो या इससे पूर्व ओड़िशा, गुजरात आदि की प्राकृतिक आपदाएँ हों, सभा यथासामर्थ्य सहायता पहुँचाती रही है।

परोपकारिणी सभा नेपाल में आये भूकम्प में अपना राहत दल आचार्य कर्मवीर, ब्रह्मचारी प्रभाकर एवं सोमेश जी के नेतृत्त्व में रवाना कर चुकी है, ताकि पीड़ित लोगों को शीघ्र सहायता पहुँचाई जा सके। सभा के आय का स्रोत आप लोगों से प्राप्त होने वाला दान ही है। सभा का आप दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस निमित्त अधिक-से-अधिक दान दें, ताकि भूकम्प पीड़ितों की सहायता-सेवा की जा सके।

पहले से ही निर्धनता से जूझते नेपाल पर एक बहुत बड़ी विपत्ति भूकम्प के रूप में आई है। ऐसा भूकम्प जिसने पूरे नेपाल की सारी अर्थव्यवस्था को डाँवाडोल कर दिया है। नेपाल का सम्भवत: कोई ऐसा परिवार नहीं, जो इस प्राकृतिक आपदा से प्रभावित न हुआ हो।

मानव सेवा ही सच्ची सेवा है।

परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा नेपाल में भूकम्प राहत कार्य चल रहा है।

नेपाल भूकम्प पीड़ितों की तन-मन-धन से सहायता करें।

विशेष:- सभा को आपके द्वारा दिया हुआ दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर-मुक्त है। आप अपनी राशि निम्नलिखित बैंक बचत खातों में भी जमा करा सकते हैं-

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने,
जयपुर रोड, अजमेर।
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

जो नित्य पदार्थों में नित्य और स्थिरों में भी स्थिर परमेश्वर है, उस समस्त जगत् के उत्पन्न करने वाले परमेश्वर की प्राप्ति और योगाभ्यास के अनुष्ठान से ही ठीक-ठीक ज्ञान हो सकता है, अन्यथा नहीं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२५

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम - योगी का आत्म चरित्र एक षड्यन्त्र है
लेखक - श्री स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती
(पूर्व नाम पं. पूर्णचन्द्र आर्य बड़ौत)
सम्पादक - प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर
प्रकाशक - वेद प्रकाश, आर्यनगर बड़ौत (मेरठ)
पृष्ठ संख्या - २४०, **मूल्य** - १२५
पुस्तक प्राप्ति स्थान- डॉ. वीरोत्तम तोमर, डी-८, आदर्शनगर, मेरठ (उ.प्र.) २५०००१
फोन ०१२१-२६६५९००, मो. ९८३७०७१७८२

समीक्षाधीन पुस्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन से सम्बन्धित एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रन्थ है। यह सामग्री सर्वप्रथम बीसवीं शताब्दी के आठवें दशक में, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साप्ताहिक मुखपत्र 'आर्य मर्यादा' में लेखरूप में क्रमश: प्रकाशित हुई थी। पुस्तक रूप में प्रथम संस्करण विक्रमी संवत् २०३८ में प्रकाशित हुआ था। प्रामाणिकता, सत्यता और ऐतिहासिक महत्ता के कारण कुछ ही काल में पुस्तक समाप्त हो गयी। इस बीच कुछ विघ्नसन्तोषी सन्तों व सेठों की सहायता से (ब्रह्म समाज के निष्ठावान् उपदेशक) दीनबन्धु वेद शास्त्री और सच्चिदानन्द योगी की पुस्तक ''योगी का आत्मचरित्र'' प्रकाशित हो गयी। तब स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित 'योगी का आत्मचरित्र- एक षड्यन्त्र है' पुस्तक का एक उत्तम संस्करण निकालने की आवश्यकता अनुभव हुई। प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जैसे प्रतिष्ठित आर्य इतिहासज्ञ ने इसका सम्पादन करना स्वीकार कर लिया। स्वामी पूर्णानन्द जी का पूरा परिवार उच्च शिक्षित, सुप्रतिष्ठित, सम्पन्न तथा दृढ़ ऋषिभक्त है। उनके सुपुत्र श्री वेदप्रकाश आर्य तथा उनके पौत्रों- श्री डॉ. वीरोत्तम एवं डॉ. पुरुषोत्तम के सौजन्य से यह संस्करण पाठकों के हाथों में पहुँच सका है।

इस संस्करण के प्रथम २९ पृष्ठों में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के सुयोग्य शिष्य और दक्षिण केसरी पं. नरेन्द्र एवं शास्त्रार्थ महारथी पं. शन्तिप्रकाश के गुरुभाई श्री स्वामी पूर्णानन्द के तपस्वी जीवन पर उनके सुपुत्र श्री वेदप्रकाश आर्य ने अति संक्षेप में प्रकाश डाला है। सम्पादकीय आलेख में प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु ने स्पष्ट किया कि ''महर्षि के जीवन पर वार प्रहार करते हुए देवगुरु भगवान सत्यानन्द अग्निहोत्री और जियालाल जैनी आदि ने बड़े षड्यन्त्र रचे। ऋषि की कल्पित जन्म पत्री तक तैयार करके छपवा दी गयी। प्रि. श्री राम शर्मा तक ऐसे षड्यंत्रकारियों की बहुत लम्बी कहानी है। एक बार पं. विश्वबन्धु शास्त्री होशियारपुर वाले ने कानपुर से महर्षि के नकली (जाली) पत्र तक प्रकाशित करवा दिये। आर्य समाज के विद्वानों ने ये सब षड्यन्त्र विफल कर दिये।''

कोलकाता के पं. दीनबन्धु आर्य समाज के साथ भी जुड़े हुए थे और ब्रह्मसमाज के भी उपदेशक व निष्काम सेवक थे। इस व्यक्ति के द्वारा रचे गये षड्यन्त्र को और ऋषि जीवन को प्रदूषित करने के पाप को हर कोई तो समझ नहीं सकता था, श्री स्वामी पूर्णानन्द जी जैसा कोई ऊँचा विद्वान् और ऋषि जीवनी का मर्मज्ञ ही पं. दीनबन्धु के षड्यन्त्र का भण्डा-फोड़ कर सकता था और उन्होंने किया।

जिज्ञासु जी के सम्पादकीय के पश्चात् एक लेख जे.वी. (पी.जी.) कॉलेज बड़ौत के संस्कृत विभाग के (से.नि.) अध्यक्ष और वैदिक वाङ्मय के प्रकाण्ड पण्डित माननीय डॉ. वेदपाल जी का है जिसमें उन्होंने स्वामी पूर्णानन्द जी के उत्कृष्ट आर्य-जीवन, त्याग, तप और महर्षि के प्रति उनकी निष्ठा की याथातथ्य चर्चा की है। आलेख में श्री डॉ. वेदपाल जी ने स्पष्ट कहा है कि पं. दीनबन्धु द्वारा लिखित पुस्तक ''योगी का आत्मचरित्र'' की अनेक कपोल-कल्पित और मिथ्या घटनाओं की निस्सारता ''स्वामी पूर्णानन्द ने ऐतिहासिक प्रमाणों एवं तर्क-युक्ति के बल पर सम्यक् रूप से सिद्ध की है। महर्षि दयानन्द का समग्र जीवन अज्ञान, पाखण्ड,कुरीति तथा अन्धविश्वास के विरुद्ध संघर्षमय रहा है। 'योगी का आत्म चरित्र' महर्षि के पवित्र जीवन को अंधविश्वास और पाखण्ड से आच्छादित करने का कुत्सित प्रयास ही कहा जा सकता है। इसका प्रतिकार महर्षि के सच्चे अनुयायी यावज्जीवन आर्य समाज के सिद्धान्तों को मनसा वाचा कर्मणा अपने जीवन द्वारा प्रसृत करने वाले स्वामी पूर्णानन्द जी ने अपने जीवन की सान्ध्यवेला में उसी दृढ़ता के साथ किया है जो जीवनभर उनके कार्यों एवं व्यवहार में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती रही है।''

''योगी का आत्म चरित्र एक षड्यन्त्र है'' ग्रन्थ के लेखन की पृष्ठभूमि के विषय में एक आलेख इन पंक्तियों के लेखक का भी है जिसमें यह तथ्य अजागर किया गया है कि पं. दीनबन्धु और सच्चिदानन्द योगी की महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन से सम्बन्धित संस्थापनाओं-मान्यताओं से आर्य विद्वान् सहमत नहीं हैं। उस समय ऋषि जीवन को प्रदूषित करने वाले इन दो पुराणकारों को डॉ. भवानीलाल भारतीय आमने-सामने बैठकर वार्तालाप करने का सुझाव दे रहे थे। मैंने आर्यसमाज देहरादून की ओर से एक निमन्त्रण सच्चिदानन्द जी योगी एवं डॉ. भारतीय को दिया कि आप लोग अपनी अनुकूलता की तिथियाँ परस्पर विचार-विमर्श से निश्चित करके आर्य समाज देहरादून के मन्त्री जी को

बता दें। वहाँ पर आप लोगों के विचार-विमार्श करने की व्यवस्था हो जाएगी और आप लोगों के मार्ग-व्यय, आवास आदि का भार आर्य समाज देहरादून वहन करेगा। मेरा यह निमन्त्रण 'आर्यमर्यादा' साप्ताहिक के ११-०३-१९७३ के अंक में पृष्ठ ९ पर प्रकाशित है। साथ ही सच्चिदानन्द योगी को यह भी लिखा कि अभी तो आप डॉ. भारतीय के आक्षेपों का ही उत्तर नहीं दे पा रहे, स्वामी पूर्णानन्द बडौत भी आपसे इस असंगत जीवनी पर बहुत से प्रश्नों का उत्तर मांग रहे हैं। तब योगी जी सामने आने से बचने का बहाना ढूँढने लगे। 'आर्य मर्यादा' के ०३-०६-७३ के अंक में पुन: एक लेख माननीय सच्चिदानन्द योगी से पुनर्निवेदन मैंने छपवाया। परन्तु योगी ने न सामने आना था, न आए। ऋषि की ज्ञात जीवनी की खोज तो इस पुराणकार कम्पनी के बस की बात नहीं थी। गप्पे गढ़-गढ़कर अज्ञात जीवनी खोज निकाली। इन ऋषि-द्वेषियों के कुत्सित प्रयास का करारा उत्तर स्वामी पूर्णानन्द जी द्वारा लिखित ग्रन्थ ''योगी का आत्म चरित्र एक षड्यन्त्र है'' के रूप में नई साज-सज्जा के साथ पाठकों के सम्मुख है।

विद्वान् लेखक ने इस ग्रन्थ के ३८ पृष्ठों के प्राक्कथन में पं. दीनबन्धु और सच्चिदानन्द योगी द्वारा ऋषि दयानन्द के जीवन को विकृत रूप में सुनियोजित षड्यन्त्र के माध्यम से कलंकित करने की पोल-पट्टी खोली है। इन ऋषि द्वेषियों द्वारा लिखित जाली पुस्तक का प्रकाशन महात्मा आनन्द स्वामी के सौजन्य से सम्भव हो सका और उन्होंने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। महात्मा आनन्द स्वामी का वैदिक सिद्धान्तों के प्रति कोई दृढ़ आग्रह नहीं था और गप्प मिश्रित चटपटी बातों से उन्हें कोई परहेज नहीं था। अत: स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी ने अपने ग्रन्थ के इस प्राक्कथन में महात्मा आनन्द स्वामी के असत्य और हास्यास्पद व्यवहारों की विस्तार से चर्चा की है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे युग-पुरुष की जीवनी के ऐतिहासिक पक्ष को परखने की पैनी दृष्टि तो महात्मा आनन्द स्वामी की नहीं ही थी।

''योगी का आत्म चरित'' पुस्तक के सम्बन्ध में स्वामी पूर्णानन्द जी लिखते हैं कि ''मैंने उसको आद्योपान्त बड़े ध्यानपूर्वक और ऊहापोह के साथ कई बार पढ़ा है। उसको पढ़कर मेरी निष्पक्ष सम्मति यह है कि यह पुस्तक आदि से अन्त तक झूठी कल्पनाओं से भरी हुई है। इसमें एक अंश भी महर्षि दयानन्द का कहा हुआ नहीं है। इस पुस्तक का अभिनन्दन करने वालों ने भी सत्य की कसौटी पर कसे बिना इसकी प्रशंसा कर दी है।'' इस पुस्तक 'योगी का आत्मचरित' को मनगढ़न्त कहानी घोषित करते हुए स्वामी पूर्णानन्द जी कहते हैं कि- ''मेरे सामने एक ऐसी सर्वमान्य कसौटी है कि जिसको सारा आर्यजगत् सर्वथा शुद्ध और निर्दोष कसौटी मानता है। वह कसौटी महर्षि दयानन्द जी की अपने हाथ से लिखी हुई और वाणी से कही हुई आत्म कथा है जो उन्होंने १८७५ में पूना नगर में सार्वजनिक सभा में सुनाई और सन् १८८० ई. में थियोसोफिस्ट पत्र को अपने हाथ से लिखकर और अंग्रेजी में अनुवाद करवाकर भेजी यह स्वामी जी का अपने जीवन के सम्बन्ध में सबसे अन्तिम लेख है, अत: यह सबसे अधिक प्रामाणिक भी है।''

'योगी का आत्म चरित' पुस्तक में भी पृष्ठ २८३ से ३३१ तक इसे प्रकाशित किया है और इसको सर्वथा प्रमाण माना है। इसी सर्वसम्मत कसौटी पर कसकर स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी ने इस पुस्तक में दिये विवरणों, महर्षि द्वारा की गई बंगालियों की प्रशंसा, १८५७ के स्वाधीनता संग्राम में महर्षि की संलिप्तता, क्रान्तिकारियों से उनकी तथाकथित भेंट आदि को असत्य सिद्ध किया है। जिस चतुराई से दीनबन्धु जी और सच्चिदानन्द योगी जी ने झूठ परोसा था, उसकी शव-परीक्षा स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी ने बड़ी कुशलता से की है। महर्षि के यात्रा-वृतान्तों का उल्लेख करने में तो ऋषि-द्वेषियों ने शेखचिल्ली को भी पछाड़ दिया। कार्तिक सम्वत् १९१३ से आश्विन सम्वत् १९१४ तक ऋषि लगभग एक वर्ष की अवधि में उत्तर प्रदेश के १८ स्थानों पर भ्रमण करते रहे और अपनी योग-साधना में भी पूरी निष्ठा से लगे रहे। इस यात्रा-क्रम से यही पता चलता है कि स्वामी दयानन्द इस एक वर्ष में उत्तर प्रदेश से बाहर कहीं एक मिनट के लिए भी नहीं गए जबकि 'योगी का आत्म चरित' पुस्तक में स्वामी दयानन्द को इसी अवधि में श्रीनगर कश्मीर से कन्या कुमारी तक के ११० स्थानों की सैर करा दी।

योग दर्शन विषयक भी असंगत बातें दीनबन्धु ने स्वामी दयानन्द के मुख से कहलवाई हैं। सैकड़ों झूठी बातों से प्रकरण भरे हुए हैं। पं. दीनबन्धु तो वास्तव में ईसामसीह का वकील है जो ईसा को वेद प्रचारक, वेद-पंथी, सत्यवादी, महाविद्वान्, कुशलवक्ता और सिद्धयोगी बताकर सत्यार्थप्रकाश के १३वें समुल्लास में ईसा के ऊपर महर्षि के आक्षेपों को और पं. लेखराम जी जैसे धर्मवीरों द्वारा ईसाई मत के खण्डन को व्यर्थ सिद्ध करना चाहता है क्योंकि वह हृदय से ब्रह्मसमाज का उपदेशक है। सच्चिदानन्द योगी श्रीमद् भागवत आदि पुराणों के वकील बनकर श्री स्वामी दयानन्द जी द्वारा किये गये पाखण्ड- खण्डन एवं अवतारवाद की आलोचना को व्यर्थ सिद्ध करना चाहता है। स्वामी पूर्णानन्द जी ने इन लोगों के छल-कपट का सप्रमाण सटीक उत्तर दिया है। ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रह योग्य है। **- सत्येन्द्रसिंह आर्य, जागृति विहार, मेरठ**

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में आयोजित

भव्य वेद प्रचार यात्रा

गृह त्याग के पश्चात् महर्षि की अपने गृह-राज्य की पहली और अन्तिम यात्रा की स्मृति में इस भव्य वेद प्रचार यात्रा का आयोजन किया जा रहा है।

यह यात्रा नासिक (महाराष्ट्र) से २४-०६-२०१५ को आरम्भ होगी। अब से १४० वर्ष पूर्व ईसवी सन् १८७४ में ऋषिवर नासिक पधारे थे और वहाँ रामनगर, पंचवटी आदि स्थानों पर वेद प्रचार एवं पाखण्ड का खण्डन किया था। नासिक से महर्षि जी मुम्बई, सूरत, भड़ौच, अहमदाबाद, राजकोट, बड़ौदा आदि स्थानों पर गए थे। वेद प्रचार की जितनी आवश्यकता उस युग में थी, उससे कहीं अधिक आज है।

परोपकारिणी सभा के कार्यकारी प्रधान माननीय डॉ. धर्मवीर जी, मन्त्री श्री ओम मुनि जी, प्रसिद्ध आर्य इतिहासज्ञ प्रा. राजेन्द्र जी जिज्ञासु इस यात्रा में विभिन्न स्थानों पर आयोजनीय सभाओं को सम्बोधित करेंगे जिससे आर्य समाजों में जागृति आये और ऋषि-मिशन का काम गति पकड़े।

परोपकारिणी सभा की ओर से आर्यसमाजों को निमन्त्रण है कि वे भी इस यात्रा में जहाँ-जहाँ सम्भव हो, सम्मिलित होने की कृपा करें।

इस यात्रा में गुरुकुल सूपा, कच्छोली, नवसारी, सूरत, भरुच, बड़ौदा, चाणोद, कर्णावती (अहमदाबाद), आणन्द, भावनगर, दीव, पोरबन्दर, जामनगर, चोटीला, जूनागढ़, राजकोट, टंकारा, मोरबी, गाँधीधाम, भुज, लुड़वा, नखत्राणा, माण्डवी, अञ्जार, भाभर, पाटन, डीसा आदि स्थानों पर जाने का कार्यक्रम है। यात्रा में सुविधा व आवश्यकतानुसार कार्यक्रम परिवर्तन सम्भव है।

आर्य जनों को आर्य साहित्य उपलब्ध कराने के लिए प्रचारार्थ एवं विक्रयार्थ पुस्तकें भी एक वाहन पर उपलब्ध होंगी। आर्य समाजें, इस कार्य में सहयोग करेंगी, ऐसी आशा है। सभा के बैंक खाते में एतदर्थ सहायता राशि जमा कराई जा सकती है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

जो ईश्वर वेदविद्या से अपने सांसारिक जीवों और जगत् के गुण, कर्म्म, स्वभावों को प्रकाशित न करता तो किसी मनुष्य को विद्या और इनका ज्ञान न होता और विद्या वा उक्त पदार्थों के ज्ञान के विना निरन्तर सुख क्यों कर हो सकता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५४

१६ से ३१ मई २०१५

कोलाहल भी कितना प्यारा हो सकता है, रोमांचक हो सकता है, इसकी अनुभूति ऋषि उद्यान के अन्तेवासियों को इस पखवाड़े में हुई। प्रान्तीय आर्य वीर दल के शिविर में राजस्थान और देश के अन्य प्रान्तों से आए शिविरार्थियों का मेला-सा लगा था पूरे परिसर में। बालकों में उत्सुकता और निर्द्वन्द्वता झलकती थी। उसे देखकर ऋषि उद्यान में रहने वालों को अपना-अपना बचपन अवश्य याद आया होगा। इस पखवाड़े में सभी विभागों ने अपने निर्धारित कार्य किए ही, साथ ही शिविर का दायित्व भी पूरी तरह सम्भाला। भोजनशाला की सुचारु व्यवस्था, चिकित्सालय की उपयुक्त सेवा तथा ऋषि उद्यान की सफाई-आयोजना के पीछे सभी की लगन और कर्त्तव्यनिष्ठा का बड़ा हाथ रहा। गौशाला, पुस्तकालय, कार्यालय, यन्त्रालय- सभी के काम सन्तोषप्रद एवं नियमानुसार हुए, मानो आर्यवीरों के कर्मयोग को ही सभी साधक अपने-अपने कर्मक्षेत्र में जी रहे थे। जंगल में जाकर मन को साधने के बजाय कर्मक्षेत्र में रहकर मन को साधना बड़ी बात है-

जंगल में मन सध गया, तो क्या मारा तीर।
कर्मक्षेत्र में मन सधे, तो ही सच्चा वीर।।

प्रात:कालीन स्वाध्याय, प्रवचन, मनन और अनुशीलन:- पिछले कई दिनों से **डॉ. धर्मवीर जी** आर्यसमाज के विभिन्न आयोजनों, संगोष्ठियों एवं समारोहों में अपनी सक्रिय एवं सार्थक उपस्थिति दे रहे हैं, फलत: ऋषि उद्यान के ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी एवं अन्य साधक उनकी प्रवचन-शृंखला का लाभ नहीं ले पाए। संयोग से इस पखवाड़े के प्रात:कालीन स्वाध्याय सत्र में उनके प्रवचन का लाभ सभी अन्तेवासियों को मिला। अपने यात्रा-संस्मरणों के मध्य उन्होंने बैंगलूर के वैदिक विद्वानों एवं याज्ञिकों से हुई वैचारिक चर्चाओं और संवादों का सार सबके सामने रखा। दक्षिण भारत में शैव चिन्तन से जुड़े वेदज्ञों में यज्ञ-याग के कर्मकाण्ड को लेकर जो आडम्बर, हिंसा, प्रदर्शन एवं अपव्यय की अतिशयता और अनियन्त्रितता है, उसके कारण वैदिक परम्पराओं की पावनता, वैधता, लोकप्रियता और शालीनता कलंकित हो रही है। उनकी कुछ बातें अनुकरणीय भी हैं, पर आर्य समाज के बड़े फलक पर और महर्षि दयानन्द के निर्देशों की छाया में व्यावहारिकता और प्रासंगिकता से विहीन उनके कई आचरण नए-नए प्रश्न खड़े करते हैं। धर्मवीर जी ने वहाँ के पण्डितों, आचार्यों, आयोजकों एवं याज्ञिकों के सम्मुख अपनी निरपेक्ष और तटस्थ बातें बड़े ही प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत कीं।

प्रात:कालीन स्वाध्याय शृंखला में **श्री सत्येन्द्रसिंह जी आर्य** यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के मन्त्रों की व्याख्या करके ऋषि उद्यान के साधकों को वेदामृत पिला रहे हैं। चौथे मन्त्र का अर्थ करते हुए उन्होंने बताया कि हम इन्द्रियों की सहायता से परमात्मा को नहीं प्राप्त कर सकते। मन चंचल है, शक्तिशाली है, जिस इन्द्रिय के साथ होता है उसे पूरा सक्रिय बना देता है। परमात्मा इन्द्रियों को लाँघ जाता है, अर्थात् उनकी पकड़ में नहीं आता। ईश्वर आत्मा की भी आत्मा है। अग्रिम मन्त्र में ऋषि कहते हैं कि अधार्मिक और अज्ञानी व्यक्ति ईश्वर की अनुभूति नहीं कर सकता। हमारे और परमात्मा के बीच अज्ञान का आवरण पड़ा है, अत: हम उसके निकट होते हुए भी सदा दूर ही बने रहते हैं। परमात्मा का नैकट्य प्राप्त करने के लिए उसके गुण, कर्म एवं स्वभाव से परिचित होना पड़ेगा। यदि परमात्मा के गुण, कर्म एवं स्वभाव को हम अपने जीवन में उतारें तो उसकी निकटता जल्दी प्राप्त होगी। यद्यपि वह हमारे अणु-अणु में व्याप्त है, फिर भी अविद्या के कारण हम उसे पहचान नहीं पाते हैं। प्रभु की सर्वव्यापकता एवं सत्ता को अनुभव करने वाला व्यक्ति सब प्रकार के सन्देह एवं घृणा से ऊपर उठ जाता है। ऋषि कहते हैं:-

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति।।

हम प्रभु को सबमें और सबको प्रभु में देखें- यही तत्त्वज्ञान है। सन्देह एवं घृणा से ऊपर उठने का यही साधन है। इसी तरह अगले मन्त्र में कहा गया है कि जीवात्मा और परमात्मा दो सत्ताएँ हैं, किन्तु सब जीव प्रभु में है, अत: पृथक् न होकर आत्मा ही आत्मा है, ऐसा अनुभव करके हम शोक और मोह से मुक्त हो सकते हैं। इसी प्रात:कालीन सत्र में परोपकारिणी सभा के संयुक्त मंत्री श्री दिनेश जी शर्मा को उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ पर हार्दिक बधाई दी गई।

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर के सन्दर्भ में विशेष रूप से पधारे आर्य समाज के प्रखर विद्वान् एवं इतिहासज्ञ

श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु का ऋषि उद्यान के प्रातःकालीन सत्र में बड़ा ही प्रेरणास्पद प्रवचन हुआ। आपने बताया कि अथर्ववेद से सम्बन्धित २६ मन्त्रों में ब्रह्मचारियों के गुण एवं लक्षण के साथ ही आचरण एवं चिन्तन से सम्बन्धित बड़े ही प्रभावपूर्ण निर्देश दिये गए हैं। ब्रह्मचारियों के लिए जो अनिवार्यताएँ हैं, उनमें हवन, तप, मेखला, समिधा आदि को परिगणित किया गया है। वर्तमान युग में स्कूलों के लिए जो यूनिफार्म निश्चित किये जाते हैं, वे व्यय साध्य, अस्वास्थ्यकर एवं दम्भ के प्रतीक बने हुए हैं। खान-पान एवं आचरण बिगड़ गए हैं। श्री जिज्ञासु जी ने फ्रांस एवं जर्मनी के बीच हुए युद्ध का संदर्भ देकर चरित्र की पवित्रता का महत्त्व बताया। उन्होंने कहा कि तप जीवन बीमा की तरह है, जो जीवन के साथ मृत्यु को भी सुधारता है। एक अन्य प्रवचन में उन्होंने सामवेद का सन्दर्भ देकर कहा कि परमात्मा से प्रार्थना करें कि हम पर आक्रमण हो, लेकिन वह मस्ती का आक्रमण हो। हम पर नशा चढ़े, लेकिन वह कर्त्तव्य का नशा हो। उन्होंने यह भी कहा कि छोटा-सा असत्य भी पूरे सत्य को दूषित कर देता है। हमारा तन चाहे मैला हो, पर मन निर्मल होना चाहिए। उन्होंने कुछ रोचक प्रसंग भी सुनाए। एक अन्य प्रवचन में जिज्ञासु जी ने कहा कि सुवास और मधुरता ही जीवन को अमरत्व प्रदान करती है। महर्षि दयानन्द जी का जीवन स्वयं एक भाष्य था। उनका आचरण बोलती ऋचाओं की तरह था। इस सम्बन्ध में जिज्ञासु जी ने अपने एवं अन्य महापुरुषों के कई संस्मरण सुनाए। ईश्वर के स्वरूप, स्वभाव एवं स्थान के विषय में भी उन्होंने वेद मन्त्र का आधार लेकर कहा कि वह सर्वज्ञ है, सर्वत्र है और सार्वकालिक है। पौराणिक लोग कहते हैं- भक्तों के वश में है भगवान, जबकि आर्यसमाजी कहते हैं-भगवान के वश में है सारा जहान। महर्षि दयानन्द के जीवन की कई दुर्लभ बातें, कई रोचक घटनाएँ भी उन्होंने सुनाईं।

डॉ. धर्मवीर जी का प्रवास से लौटना अर्थात् ऋषि उद्यान में चिन्तन के पुनरावलोकन का प्रत्यावर्त्तन है। वे जब भी लौटते हैं, प्रातःकालीन स्वाध्याय सत्र में मनन के लिए नूतन मन्त्र प्रदान करते हैं। इस बार उन्होंने योग के व्यावहारिक पक्ष को तो उभारा ही, सत्य और असत्य, पाप और पुण्य तथा प्रत्यक्ष और परोक्ष के द्वन्द्वों को समझने और परखने के लिए कसौटियाँ भी दीं। उन्होंने कहा कि इन्द्रियों का आनन्द मुक्ति के आनन्द से सर्वदा छोटा ही रहेगा, पर मनुष्य तात्कालिक फल देने वाली साधना को महत्त्व देता है। देव परोक्ष प्रिय हैं, मनुष्य प्रत्यक्ष प्रिय है। संसार का जितना झूठ है, वह सत्य का मुखौटा पहनकर ही जीत पाता है। झूठ तब तक नहीं चलता, जब तक उस पर सत्य की मुहर नहीं लगती। सत्य के नाम में यदि इतनी शक्ति है, तो उसके काम में, उसके व्यवहार में, उसके परिणाम में कितनी शक्ति होगी? मनुष्य धर्म नहीं करना चाहता, पर उसके दुष्परिणामों से बचना चाहता है। जीवन की इस विडम्बनापूर्ण प्रहेलिका को परोक्षवृत्ति ही सुलझा सकती है। एक अन्य प्रवचन में 'शची पौलोमी' सूक्त के आधार पर नारी की चर्चा करते हुए डॉ. धर्मवीर जी ने कहा कि महिलाओं को पुरुषों की तुलना में समुचित अधिकार प्राप्त नहीं हैं- यह कहना मात्र भ्रम को पालना है। प्रत्येक उदित होते सूर्य में सौभाग्य को देखने वाली शची इस भ्रम का भंजन करती है। इस सूक्त में वक्ता और विषय दोनों ही एक हैं और दोनों ही बुद्धि से जुड़े हैं। मनुष्य की विचित्रता यह है कि उसका ज्ञान सदा अधूरा रहता है, अर्थात् अधिक ज्ञान की हमेशा सम्भावना बनी रहती है। यही जिज्ञासा और जिजीविषा प्रतिदिन उगने वाले सूर्य में सुख, सौभाग्य एवं समृद्धि के दर्शन करती है। सूर्य केवल उदित नहीं होता, वह हमें जाग्रत भी करता है, हमारे अणु-अणु में चेतना भी जगाता है। शची पौलोमी के छहों मन्त्र अपने-अपने अर्थों को दूर-दूर तक ले जाते हैं, साधकों को शाश्वत निर्णय तक पहुँचाते हैं।

सायंकालीन स्वाध्यायः मनन, मन्थन और मार्गदर्शनः- सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास का पठन, मनन एवं चिन्तन अबाध रीति से चल रहा है। **श्री सत्येन्द्रसिंह जी** ने बताया कि महर्षि ने पढ़ने-पढ़ाने के लिए परीक्षा लेकर ग्रन्थों के चयन करने की बात कही है। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, सम्भव और अभाव शीर्षक आठों प्रमाणों का भेद-उपभेद सहित विस्तार के साथ स्वाध्याय कराया गया और प्रत्येक को उदाहरण देकर सरल भाषा में समझाया गया। पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा और मन- ये ९ द्रव्य हैं। इसी तरह रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथकत्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, गुरुत्व, द्रव्यत्व, स्नेह, संस्कार, धर्म, अधर्म और शब्द- ये २४ गुण हैं। गुण उसको कहते हैं जो द्रव्य के आश्रय में रहे, अन्य गुण को धारण न करे, संयोग और विभाग में कारण न हो तथा एक-दूसरे की उपेक्षा न करे।

महर्षि दयानन्द जी के जीवन की कुछ अद्‌भुत घटनाओं की चर्चा भी स्वाध्याय के मध्य में श्री सत्येन्द्रसिंह जी करते रहे हैं। गुरु विरजानन्द जी के आश्रम में प्रयोग-सिद्धि के मन्त्र का कुछ अंश भूल जाना, उसके फलस्वरूप गुरु जी की प्रताड़ना और फिर समाधि की स्थिति में मन्त्र का स्मरण होना- जैसी घटनाओं से ऋषिवर का मन्त्र दृष्टा रूप उजागर होता है। वेद मन्त्रों का अर्थ लिखवाते समय भी शिष्यों को महर्षि के इस मन्त्र दृष्टा रूप का परिचय मिलता था।

'सत्यार्थप्रकाश' के तृतीय समुल्लास का स्वाध्याय सत्र सायंकालीन प्रवचन के रूप में चल रहा है । महर्षि ने जीवात्मा के २४ गुण बताए हैं और फिर विस्तार से उनकी व्याख्या की है। मन की परिभाषा बताते हुए उन्होंने कहा है कि जिससे एक काल में दो पदार्थों का ज्ञान ग्रहण नहीं होता, उसे मन कहते हैं। महर्षि ने कारण, कार्य, परिणाम, भाव, अभाव, विद्या, अविद्या, नित्य, अनित्य, व्याप्ति आदि दार्शनिक एवं पारिभाषिक शब्दों की सप्रमाण व्याख्या की।

श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु आर्य समाज के प्रतिष्ठित विद्वान्, खोजी इतिहासज्ञ एवं प्रखर वक्ता हैं। आपने ऋषि उद्यान के अन्तेवासियों को सांयकालीन प्रवचन सत्र में सम्बोधित करते हुए कहा कि संसार का श्रेष्ठतम एवं पवित्रतम कर्म यदि कोई है तो वह हवन है, यज्ञ है। अग्नि सम्पूर्ण मानव जाति को समत्व भाव से अपनी ऊष्मा एवं ऊर्जा प्रदान करती है। वह हवन के माध्यम से पूरे परिवेश को शुद्ध एवं रोग मुक्त भी करती है। यह कार्य मनुष्य को अहंकार शून्य बनाता है, जबकि दूसरे जितने धार्मिक कार्य हैं, उनमें कहीं-न-कहीं अहंकार एवं प्रदर्शन छिपा रहता है। जिज्ञासु जी ने अपने जीवन के कई रोचक एवं शिक्षाप्रद प्रसंग भी सुनाए, जो मानवीय आदर्शों, सहित्यिक मानदण्डों एवं सामाजिक जीवन मूल्यों से जुड़े थे। एक प्रवचन में उन्होंने कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य की चर्चा करते हुए बताया कि नकारात्मक निर्देशों के बिना सकारात्मक आदेशों का कोई मूल्य नहीं होता। ये एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। वैदिक मन्त्रों में दोनों का ही समान रूप से प्रयोग हुआ है। सायंकालीन प्रवचन शृंखला में **श्री सत्येन्द्रसिंह जी** ने सत्यार्थप्रकाश के तृतीय सम्मुल्लास में महर्षि द्वारा दी गई पठन-पाठन विधि के अनुसार ग्रन्थों के चयन एवं परित्याग की सीमा रेखाएँ एवं आधार भूमियाँ समझाई।

आचार्य कर्मवीर जी से नेपाल के भूकम्प पीड़ितों की व्यथा-कथा सुनकर सभी श्रोता भाव-विह्वल हो गए। भूकम्प द्वारा सर्जित महाविनाश के कारण नेपाल विकास की दौड़ में पच्चीस वर्ष पिछड़ गया है। कर्मवीर जी ने अपने साथियों के साथ वहाँ के कई गाँवों में सहायता सामग्री पहुँचाई एवं भूकम्प प्रभावित नेपाली लोगों को सान्त्वना दी। अपने अनुभवों का निचोड़ आचार्य जी ने इन शब्दों में व्यक्त किया, 'व्यक्ति को अपने धन, वैभव एवं शारीरिक बल पर कभी गर्व नहीं करना चाहिए। पता नहीं कब और कहाँ हमारी सारी उपलब्धियाँ ताश के पत्तों की तरह बिखर जाएँ।'

विविध: आयोजन, प्रयोजन एवं संयोजन:- प्रात:कालीन एवं सायंकालीन स्वाध्याय प्रवचनों के साथ ही बीच-बीच में अन्य महानुभावों की प्रस्तुतियाँ भी होती हैं। इस पखवाड़े में एक सत्र के अन्तर्गत मिथिलेश माताजी ने गीत प्रस्तुत किया, जिसे सब सांधकों ने सराहा। इसी तरह ऋषि उद्यान के स्नातक **श्री रामदयाल** ने बहुत ही प्रभावपूर्ण रीति से संगीत-निबद्ध गीतों एवं भजनों को श्रोताओं के सम्मुख प्रस्तुत करके सायंकालीन सत्र को स्मरणीय बनाया। इसी पखवाड़े में आयोजित आर्य वीर दल का साप्ताहिक शिविर एक उपलब्धि की तरह रहा है। ऋषि उद्यान के परिसर में दिनांक १७ मई से २४ मई तक प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न स्थानों से ३०९ शिविरार्थियों ने भाग लिया। हवन एवं ध्वजोत्तोलन के बाद शिविर का उद्‌घाटन करते हुए मुख्य अतिथि माननीय लोकायुक्त **श्री सज्जनसिंह जी कोठारी** ने मननीय प्रवचन दिया एवं नवयुवकों को स्वस्थ रहकर देश की सेवा करने की प्रेरणा दी। छह दिनों तक योग, व्यायाम, कराटे, लाठी, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार आदि का पूरी तन्मयता, दत्तचित्तता और निष्ठा से प्रशिक्षण दिया गया। समापन के अवसर पर आर्य वीर दल के उत्साही नवयुवकों ने अपने विभिन्न प्रदर्शनों से दर्शकों का मन मोह लिया। इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में **श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु** ने मननीय प्रवचन दिया। मुख्य अतिथि **श्री सत्येन्द्र कुमार जी नामा** ने सभी प्रतिभागियों की उपलब्धियों को सराहा एवं प्रमाण पत्र वितरित किए। महामंत्री **श्री ओममुनि जी** ने स्वागत प्रवचन एवं आभार प्रदर्शन किया। सबके मुख से यही निकला-

तन में शक्ति, वचन में दृढ़ता,
मन में ओज, बुद्धि में ज्ञान।
आर्यवीर दल ने तप बल से
अर्जित की अपनी पहचान।।

आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम:-

१. १९-२० जनवरी २०१५ को पंकज जी आर्य व उनके सहयोगियों द्वारा आयोजित आर्य युवा चरित्र निर्माण सैद्धान्तिक शिविर में स्कूलों तथा महाविद्यालयों के लगभग ५० विद्यार्थियों तथा १० प्रौढ़ आर्य महिला-पुरुषों की मनु-विषय के शंकाओं का समाधान।

२. ३ फरवरी को लालम देसर, बीकानेर (राज.) के उच्च विद्यालय में विद्यार्थियों को उद्‌बोधन।

३. १६ से २० फरवरी को आर्यसमाज आसनसौल (प. बं.) के वार्षिकोत्सव में सहभागिता।

४. २२ फरवरी से १ मार्च तक विनोद जी आर्य नागल (सहारनपुर) के परिवार में आयोजित अथर्ववेद पारायण में वेदपाठी ब्र. रुद्रदत्त जी के साथ उपस्थिति।

५. ३ मार्च को रोबिन आर्य, गांगनौली, सहारनपुर (उ.प्र.)के घर बालिका के नामकरण संस्कार में समुपस्थिति।

६. ५ मार्च को होलिकोत्सव पर आर्यसमाज बटेड़ी (नागल) सहारनपुर (उ.प्र.) द्वारा आयोजित विशाल यज्ञ में उपस्थिति।

७. १९ से २२ मार्च को विकास आर्य, सहारनपुर (उ.प्र.) के परिवार में आयोजित सामवेद पारायण यज्ञ में वेदपाठी ब्र. सोमेश आर्य के साथ सहभागिता।

८. २३ मार्च को विपिन आर्य, आमकी दीपचन्दपुर के घर में शान्ति यज्ञ।

९. २४ मार्च को अतुल आर्य, आर्यसमाज बटेड़ी (नागल) सहारनपुर (उ.प्र.) के जन्म दिवस कार्यक्रम में उपस्थिति।

१०. २७ से २९ मार्च को आर्य युवक चरित्र निर्माण सैद्धान्तिक शिविर, आर्यसमाज पथ्रोट अमरावती (महाराष्ट्र) में उपस्थिति।

११. २ से ४ अप्रैल को गुरुकुल दल्हेड़ी, सहारनपुर में छात्रों को वर्णोच्चारण शिक्षा व सैद्धान्तिक ज्ञान।

आर्यजगत् के समाचार

१. प्रवेश प्रारम्भ:- योगीराज श्री कृष्ण की जन्मभूमि मथुरा में आर्ष गुरुकुल विजय नगर, दखौला निरन्तर प्रगति पर है। यहाँ संस्कृत भाषा के साथ गणित, अंग्रेजी, विज्ञान, इतिहास, भूगोल आदि विषयों का भी अध्ययन कराया जाता है। उत्तम संस्कारों हेतु प्रात: सायं सन्ध्या हवन एवं भजन, प्रवचन तथा श्लोक गायन की सुन्दर गतिविधियाँ चल रही हैं। छात्रों को संस्कारवान, विद्वान् वक्ता तथा बलवान बनाने का ही गुरुकुलीय लक्ष्य है। शेष जानकारी के लिए दूरभाष पर सम्पर्क करें।

सम्पर्क- स्वामी विश्वानन्द मुख्याधिष्ठाता- ०९८९७७४२१७७

२. शिविर सम्पन्न:- आर्यसमाज अकोला में दि. १५ से १९ अप्रैल २०१५ तक व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण आवासीय शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में लगभग ९० बच्चों ने भाग लिया। शिविर में प्रमुख मार्गदर्शक, उद्‌बोधक तथा प्रशिक्षक स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, आचार्य आर्ष गुरुकुल, वडलूर, कामारेड्डी, तेलंगाना, दार्शनिक विद्वान् व आर्यवीर ब्रह्मचारी अरुणकुमार मुम्बई, व्यायामाचार्य श्री शैलकुमार बिलासपुर तथा निसर्गोपचार तज्ञ डॉ. धनलाल शेन्द्रे थे।

३. शिविर का समापन:- आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, रायपुर दरवाजा बाहर, अहमदाबाद द्वारा आर्यवीरों, वीरांगनाओं के लिए दि. १४ से १६ मई २०१५ को चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। इस आवासीय शिविर में प्रात:काल से रात्रि १० बजे तक छात्र-छात्राओं को व्यायाम, कराटे, स्तूप आदि के साथ-साथ बौद्धिक, सामान्य ज्ञान भी प्रदान किया गया। इसमें काफी संख्या में शिविरार्थियों ने भाग लिया।

४. आर्ष विद्या पाठ:- पाणिनि महाविद्यालय-विरजानन्दाश्रम रेवली, सोनीपत, हरि. में सम्पूर्ण आर्ष (व्याकरण-निरुक्त-छन्द-दर्शन-वेदादि) ग्रन्थों का अध्ययन-अध्यापन पिछले लगभग १०० वर्षों से अहर्निश चल रहा है। इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य है- संस्कृत एवं वेद के धार्मिक प्रकाण्ड विद्वान् तैयार करना। वर्तमान में आचार्य श्री ओङ्कार जी के संरक्षण में गुरु-शिष्य परम्परा का निर्वहण करते हुए व्याकरण-दर्शनादि के मर्मज्ञ आचार्य श्रवण कुमार (व्याकरण-निरुक्त-दर्शनाचार्य) अपनी पूर्ण निष्ठा, श्रद्धा एवं पुरुषार्थ के साथ अध्यापन कार्य को निपुणता से कर रहे हैं, जिन्होंने गुरुवर्य स्व. पूज्यपाद श्रद्धेय आचार्य श्री विजयपाल जी विद्यावारिधि एवं आचार्य प्रदीप जी से ९ वर्षों तक व्याकरणादि ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया। सहयोगी के रूप में आचार्य पुरुषोत्तम जी भी पूर्ण मनोयोग से इस पवित्र कार्य में अपना सहयोग दे रहे हैं। त्यागी, तपस्वी, कुशाग्र एवं कर्मठ आर्षविद्या पढ़ने के इच्छुक विद्यार्थी **सम्पर्क करें**- ०७०२७३९३९६८

स्तुता मया वरदा वेदमाता-१२

वेद मन्त्र में मनुष्य को समृद्ध होने के लिये कहा गया है। घर को समृद्ध करने के लिये देवत्व के भावों को अपने में भरने के लिये मन्त्र में निर्देश दिया गया है। देवत्व के भाव मन में आने से क्या होगा- इसके लिये मन्त्र में दो बातों का निर्देश दिया गया है। इन विचारों के कारण देवों के चरित्र में दो दोष नहीं आ पाते- एक है **न वियन्ति** और दूसरा है **न विद्विषते** अर्थात् देवता मिलकर रहते हैं, उनके मन में पृथक् होने का भाव नहीं आता और न ही वे परस्पर द्वेष करते हैं। परिवार में साथ रहने का विचार नहीं होगा तो सद्भाव नहीं रहेगा, सद्भाव नहीं रहेगा तो द्वेष भाव तो उत्पन्न होगा ही।

बृहदारण्यक उपनिषद् में प्रजापति और असुरों की कथा दी गई है, जिससे देवताओं और असुरों के अन्तर का बोध होता है। असुर और देव दोनों ही प्रजापति की सन्तान हैं। उनमें भी असुर ज्येष्ठ हैं, बड़े हैं, देवता छोटे हैं। असुरों को प्रजापति से सदा ही शिकायत रहती है- प्रजापति उन्हें बड़े होने का सम्मान नहीं देते। जब भी कोई लाभ का, प्रसन्नता का अवसर आता है, वहाँ देवता ही दिखाई देते हैं। असुरों ने शिकायत की, प्रजापति ने कहा- उनके मन में कोई पक्षपात नहीं है। असुर और देवता अपने व्यवहार व विचार से ही सुख-दु:ख, सम्मान-असम्मान पाते हैं। असुरों ने कहा- हम बड़े हैं, हमें अवसर पहले मिलना चाहिए। प्रजापति ने कहा- तथास्तु।

बहुत दिनों बाद प्रजापति ने देवताओं और असुरों को अपने यहाँ भोजन पर निमन्त्रित किया। प्रतिज्ञा के अनुसार बड़े होने के नाते असुरों को भोजन पर पहले निमन्त्रित किया गया। प्रजापति ने असुरों के सामने भोजन करने से पहले एक शर्त रख दी- भोजन करने से पहले दोनों हाथों को सीधे डण्डे से बाँध दिया जायेगा। असुरों ने प्रजापति से पूछा- क्या देवताओं के साथ भी ऐसा ही होगा? प्रजापति ने कहा- दोनों के साथ समान व्यवहार किया जायेगा। आश्वासन के अनुसार असुरों को भोजन के लिए पहले बैठाया गया। भोजन तो अच्छा था, स्थिति विकट थी, परन्तु शर्त तो शर्त है। यह असुरों के साथ हो रहा है तो देवताओं के साथ भी यही होना है, यही असुरों के लिये सन्तोष की बात थी। जब कोई कष्ट अकेले को होता है तो अधिक असह्य होता है और सभी को होता है तो अपना कष्ट भी अधिक नहीं लगता। असुरों ने अपना भोजन किया, जैसे-तैसे कुछ खाया, कुछ गिराया। अब बारी आई देवताओं की। देवताओं ने असुरों का हाल तो देख ही लिया था। उन्होंने परस्पर विचार-विमर्श किया और समस्या का हल निकाल लिया। देवताओं ने दो पंक्तियाँ बनाईं और आमने-सामने बैठ गये। दोनों के सामने भोजन की पत्तलें थीं। एक ने उसकी पत्तल से ग्रास उठाया और सामने वाले के मुख में दे दिया। इसी प्रकार इस पंक्ति वाले ने दूसरी पंक्ति वाले के मुख में ग्रास दे दिया। प्रजापति ने असुरों को समझा दिया। देवताओं की पहचान है- **न वियन्ति**। वे दूसरे के लिये विपरीत विचार नहीं रखते, द्वेषभाव भी नहीं रखते। परिवार में सामञ्जस्य तभी बना रह सकता है।

घर-परिवार है या समाज है, उसमें विघटन या दूरी का भाव दो ही कारणों से उत्पन्न होता है। प्रथम हमारे अन्दर स्वार्थ की भावना आती है। हम परिवार में, समाज में अपने को पृथक् रखकर देखते हैं। हमको लगता है कि इस परिवार के सभी सदस्यों का भला करने में मेरा भला नहीं हो पा रहा है। परिवार और समाज में विघटन के दो भाव नहीं होने चाहिए- एक दूरी, वह चाहे मन की हो या स्थान की, दूसरा द्वेष भाव। इनके मूल में दो ही कारण होते हैं- एक स्वार्थ और दूसरा अहंकार। जब मनुष्य के मन में इनमें से कोई भाव आ जाता है तो उसके व्यवहार में परिवर्तन दीखने लगता है। जब परिवार के किसी सदस्य के मन में स्वार्थ का, अनुदारता का जन्म होता है, वह अपने को दूसरे के काम आने या सहयोग करने के भाव से दूर कर लेता है। मैं क्यों करूँ, मुझे क्या पड़ी है, मुझे क्या लाभ है? जब इस प्रकार के विचार मनुष्य के मन में आते हैं, तब वह स्वार्थ के मार्ग पर आगे बढ़ रहा होता है। वह अपने साधनों को भी किसी के लिए व्यय नहीं करना चाहता। उसे बाँटकर खाना अच्छा नहीं लगता, वह छिपकर खाना चाहता है। मनुष्य शिष्टाचार से भी डरता है, कहीं कुछ देना न पड़ जाय। ऐसे व्यक्ति को अपना क्षेत्र सीमित करना पड़ता है। इसके साथ यदि मनुष्य के मन में अहंकार है तो ऐसा व्यक्ति अपनी उपस्थिति के लिए परिवार व समाज में अपने को सबसे अलग बताने का यत्न करता है। मनुष्य दूसरे के नाम और प्रभाव को स्वीकार करना चाहता है, पर दूसरे की सफलता और कीर्ति को सहन नहीं कर पाता। वह आदर पाना चाहता है, परन्तु कभी आदर देने की बात उसके मन में नहीं आती।

ये दोनों ही बातें घर, परिवार एवं समाज को तोड़ने वाली और दु:ख देने वाली होती हैं। वेद मनुष्य को **न वियन्ति, न विद्विषते मिथः** इसी ओर इंगित कर रहा है। घर, परिवार एवं समाज की उन्नति तब तक नहीं होती, जब तक उसके सदस्यों में ऐसे भाव विद्यमान रहेंगे। यदि स्वार्थ और अहंकार पर अंकुश लगा दिया जाय तो कोई कारण नहीं कि घर के सदस्यों में सौहार्द, प्रेम और उन्नति के मार्ग को कोई रोक सके।

क्रमशः ....

जिज्ञासा समाधान - ८९

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा - मैंने कहीं अनेक सारे प्रश्न पढ़े थे, उनमें सभी प्रश्न उत्सुकता पैदा करने वाले थे। वे ईश्वर विषयक, एवं आत्मा, कर्मफल आदि से सम्बन्धित प्रश्न थे। उनमें से कुछ प्रश्न आपके पास लिखकर भेज रहा हूँ, आशा है समाधान करेंगे।

(क) जीवात्मा शरीर धारण क्यों करता है, कब से कर रहा है और कब तक करेगा?

(ख) क्या जीव भूत, प्रेत, डाकन आदि भी बनता है?

(ग) शरीर में जीवात्मा कब आता है?

(घ) जीवात्मा की मुक्ति क्या है, मुक्ति का समय कितना है, वह कैसे प्राप्त होती है?

- **धीरज कुमार पांचाल**

समाधान - आध्यात्मिक व्यक्ति के मन में अध्यात्म विषयक प्रश्न उठते रहते हैं, ऐसा व्यक्ति अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए इन प्रश्नों के हल को खोजता रहता है। जब तक सन्तुष्टि दायक उत्तर नहीं मिल जाता, तब तक वह इनके समाधान की चाह में लगा रहता है। मैं कौन हूँ, शरीर में क्यों आया हूँ, कब तक शरीर में आना-जाना लगा रहेगा, कौन मुझे शरीर में भेजता है, आदि-आदि प्रश्न आध्यात्मिक व्यक्ति को विचारने के लिए बाध्य कर देते हैं। आपके प्रश्न भी अध्यात्म से जुड़े हुए हैं। इन सबका यहाँ एक-एक कर समाधान करते हैं।

(क) जीवात्मा शरीर धारण क्यों करता है? इसमें पहले हमें यह निश्चय करना चाहिए कि जीवात्मा स्वयं किसी शरीर को धारण नहीं करता, नहीं कर सकता। जीवात्मा को शरीर धारण परमात्मा करवाता है। उसका कारण जीवात्मा के अविद्या पूर्वक किये गये कर्म हैं। जब जीवात्मा अज्ञानता पूर्वक कर्म करता है, अथवा संसार के सुख की इच्छा से ज्ञानपूर्वक भी कर्म करता है, तब परमेश्वर उसको कर्मों का फल भोगने के लिए शरीर धारण कराता है। जीवात्मा के शरीर धारण करने का या कराने का मुख्य कारण उसके कर्म हैं।

यह शरीर धारण कब से कर रहा है? तो इसके उत्तर में कह सकते हैं कि अनन्त काल से शरीर धारण करता आ रहा है। आपने पूछा- कब तक करेगा? तो इसको भी इसी प्रकार कह सकते हैं कि अनन्त काल तक करेगा। हाँ, यह अवश्य है कि यह शरीर धारण करना मुक्ति के काल को छोड़कर है, क्योंकि मुक्ति में बिना शरीर धारण किये जीवात्मा मुक्ति के आनन्द को अपने स्वाभाविक सामर्थ्य से, परमेश्वर के सहयोग से भोगता है। जैसे मुक्ति में बिना शरीर धारण किये रहता है, वैसे ही प्रलय काल में भी जीवात्मा बिना शरीर के मूर्छा अवस्था में रहता है।

शरीर के धारण करने का कारण जैसा पूर्व में कहा, उसकी अविद्या है। जब तक आत्मा अविद्या युक्त रहता है, तब तक शरीरादि के बन्धन में रहता है और जब अविद्या का नाश कर यथावत् ज्ञान को प्राप्त हो, अपने बन्धन संस्कारों को नष्ट कर देता है, तब यह शरीर को छोड़ मुक्ति को प्राप्त होता है। मुक्ति की अवधि पूरी होने पर पुनः शरीर के बन्धन में आता है। यह मुक्ति-बन्धन का चक्र अनादि काल से चला आया है और चलता रहेगा।

इसी आधार पर हमने कहा कि आत्मा मुक्ति व प्रलय काल को छोड़कर अनन्तकाल से शरीर धारण करता आया है और धारण करता रहेगा।

(ख) जीवात्मा भूत, प्रेत, डाकन आदि कभी नहीं बनता, क्योंकि इस प्रकार की कोई योनि अथवा शरीर है ही नहीं। जीवात्मा शरीर छोड़ने के बाद स्वतन्त्र रूप से न कुछ कर सकता और न ही किसी शरीर में प्रवेश कर सकता है। भूत-प्रेत किसी योनि विशेष के नाम नहीं हैं। मरे हुए शरीर का नाम 'प्रेत' है और उसका दाह कर्म हो चुकने के बाद उसका नाम भूत है। 'भूत' शब्द का सीधा अर्थ है 'हो चुका', अर्थात् जो होकर न रहे, उसका नाम भूत है। भूत, प्रेत, डाकन आदि नामों से योनि विशेष की कल्पना धूर्त लोगों ने भोले-भाले लोगों को ठगकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए की है।

कुछ लोग कहते हैं कि कभी-कभी भूत-प्रेत सम्बन्धी ऐसी घटनाएँ देखने-सुनने में आती हैं, जिनके कारण भूतों और उनके कारनामों को नकारा नहीं जा सकता और न मानने वालों को भी बरबस मानना पड़ता है, परन्तु ऐसी घटनाओं की भली प्रकार जाँच-पड़ताल की जाये तो वास्तविकता सामने आ जाती है। वस्तुतः उनके मूल में कुछ धूर्त लोगों की चालाकी और दूसरों की मानसिक दुर्बलता होती है। बचपन में भूत-प्रेतों की कहानियाँ सुनते-सुनते उनके संस्कार इतने गहरे हो जाते हैं कि बड़े होने

और काफी समझदार हो जाने पर भी उनका निकलना दूभर हो जाता है। यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि भूत-प्रेत की वास्तविक सत्ता बाह्य जगत् में न होकर, उसे मानने वाले के मन में पहले से विद्यमान रहती है। तब उसे सर्वत्र भूत-ही-भूत नजर आने लगते हैं। जिसके मन में भूत नहीं होता , वह उसे कहीं भी, कभी भी नहीं मिलता, इसलिए भूत-प्रेत की मिथ्या कल्पना में नहीं पड़ना चाहिए।

(ग) शरीर में जीवात्मा गर्भस्थापन के समय में ही आ जाता है। यह व्यवस्था नर-मादा के संयोग होने पर है। पेड़-पौधे आदि में उनके बीजादि के अंकुरित होने की परिस्थिति में आता है। ऐसे ही स्वेदज योनि के शरीरों में भी जानें।

(घ) महर्षि दयानन्द के शब्दों में मुक्ति है-

मुञ्चन्ति पृथग्भवन्ति जना यस्यां सा मुक्तिः।

अर्थात् जिससे छूट जाना हो, उसका नाम मुक्ति है। महर्षि कहना चाहते हैं कि समस्त दुःखों से सर्वथा छूटकर सुख को प्राप्त होना, ब्रह्म में रहना मुक्ति है। ऐसी स्थिति को प्राप्त होना जीवात्मा की मुक्ति है। इसी स्थिति को सभी ऋषियों ने मुक्ति माना है-

तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः।। दुःखजन्मप्रवृत्तिदोष मिथ्याज्ञानानामुत्तरोत्तरापाये तदनन्तरापायादपवर्गः।।

- न्याय.१.१.१२,१.१.२

अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः।

- सांख्य. १.१

महर्षियों द्वारा वर्णित और परिभाषित इस मुक्ति से अन्य मतवादियों और पुराणादि मिथ्या ग्रन्थों में कही गई कतिपय मुक्ति का निराकरण हो जाता है।

मुक्ति की एक निश्चित अवधि है, उस अवधि के पूरा होने पर पुनः आत्मा शरीर धारण करता है। उस मुक्ति की अवधि को महर्षि दयानन्द ने मुण्डकोपनिषद् के आधार लिखा है। वे लिखते हैं-

ते ब्रह्मलोके ह परान्तकाले परामृतात् परिमुच्यन्ति सर्वे।।

-वे मुक्त जीव मुक्ति में प्राप्त होके ब्रह्म में आनन्द को तब तक भोग के पुनः महाकल्प के पश्चात् मुक्ति सुख को छोड़ के संसार में आते हैं।

इसकी संख्या है- तेंतालीस लाख बीस सहस्र वर्षों की एक 'चतुर्युगी', दो चतुर्युगियों का एक 'अहोरात्र', ऐसे तीस अहोरात्र का एक 'महीना', ऐसे बारह महीनों का एक 'वर्ष', ऐसे शत वर्षों का परान्तकाल होता है।

इसको गणित की रीति से यथावत् समझ लीजिये- इतना समय मुक्ति में सुख भोगने का है। गणित की रीति अनुसार ३१ नील १० खरब ४० अरब मानुष वर्ष पर्यन्त मुक्ति का काल है। इतने काल पर्यन्त जीवात्मा दुःख से रहित मुक्ति के आनन्द को भोगता है।

मुक्ति कैसे प्राप्त होती है? किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तीन बातों का ज्ञान होना आवश्यक है- एक कर्त्ता, दूसरा उसकी क्रिया और तीसरा साधन। ये तीनों ठीक हैं तो लक्ष्य प्राप्त होता है। कर्त्ता अर्थात् लक्ष्य प्राप्त करने वाला। यह कर्त्ता यदि लक्ष्य प्राप्ति की तीव्र इच्छा रखते हुए ठीक क्रिया और ठीक साधनों का प्रयोग कर रहा है तो वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा। यदि इन तीनों में से किसी एक में भी न्यूनता हुई तो लक्ष्य प्राप्त न होगा।

आपने पूछा- मुक्ति कैसे प्राप्त होती है? तो इसका सामान्य सा उत्तर है- योगाभ्यास से, अर्थात् जब जीवात्मा योगाभ्यास से अपने अन्तःकरण को पवित्र कर, संसार से विरक्त हो, परमेश्वर को प्राप्त कर, अपनी अविद्या की गाँठ को नष्ट कर देता है, तब उसे मुक्ति प्राप्त होती है। मुक्ति के साधन योगदर्शनादि शास्त्रों में विस्तार से कहे गये हैं।

हम यहाँ महर्षि दयानन्द द्वारा कहे गए मुक्ति के कुछ उपायों को लिखते हैं- ''परमेश्वर की आज्ञा पालने, अधर्म, अविद्या, कुसंग, कुसंस्कार, बुरे व्यसनों से अलग रहने और सत्य भाषण, परोपकार, विद्या, पक्षपातरहित न्याय, धर्म की वृद्धि करने, पूर्वोक्त प्रकार से परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अर्थात् योगाभ्यास करने, विद्या पढ़ने-पढ़ाने और धर्म से पुरुषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने, सबसे उत्तम साधनों को करने और जो कुछ करे, वह सब पक्षपात रहित न्यायधर्मानुसार ही करे- इत्यादि साधनों से 'मुक्ति' और इनसे विपरीत ईश्वराज्ञा भंग करने आदि काम से 'बन्ध' होता है।'' सत्यार्थप्रकाश, समुल्लास ९

इन सब साधनों के करने से मुक्ति होती है। उपरोक्त सभी विषयों को विस्तार से जानने के लिए महर्षि दयानन्द का सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पढ़ें। अस्तु

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

जो विद्वान् लोग परोपकार बुद्धि से विद्या का विस्तार करने, सुगन्धि, पुष्टि, मधुरता रोगनाशक गुणयुक्त पदार्थों का यथायोग्य मेल अग्नि के बीच में उनका होम कर शुद्ध वायु वर्षा का जल वा ओषधियों का सेवन करके शरीर को आरोग्य करते हैं, वे इस संसार में अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होते हैं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५८

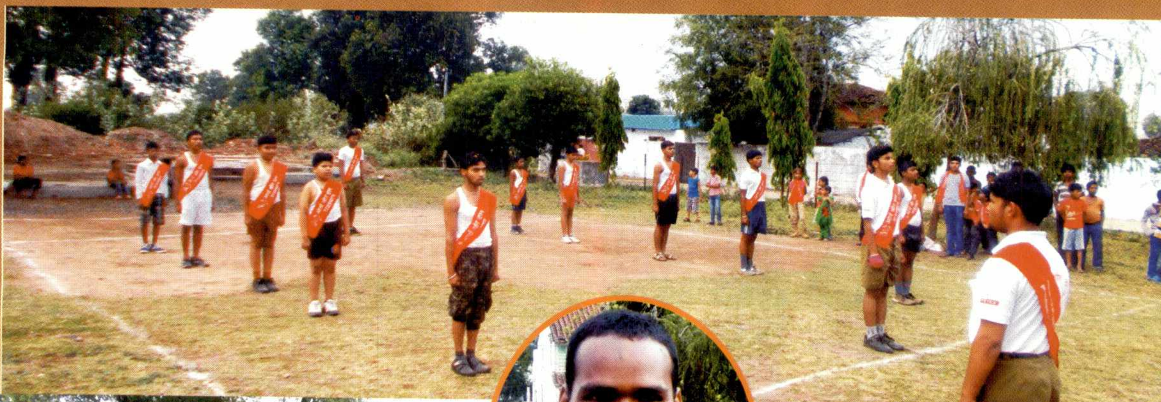

आचार्य सत्यप्रिय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द उद्यान जमानी, इटारसी, मध्यप्रदेश में आयोजित आर्य वीर दल शिविर की झलकियाँ

(८ से १४ अप्रेल, २०१५)

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक प्रेषण : १५ जून, २०१५ ३९५९/५९

पं. गणपति शर्मा

शास्त्रार्थ महारथी, अद्वितीय वाग्मी तथा दार्शनिक पं. गणपति शर्मा का जन्म राजस्थान के चुरू नगर में १९३० वि. (१८७३ ई.) में पाराशर गोत्रीय पारीक ब्राह्मण पं. भानीराम जी के यहाँ हुआ। पिता पं. भानीराम पौरोहित्य के साथ-साथ वैद्यक का व्यवसाय भी करते थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा चुरू में ही हुई। व्याकरण तथा साहित्य में आपने अच्छा नैपुण्य प्राप्त कर लिया। राजस्थान में आर्यसमाज के महान् प्रचारक, महर्षि दयानन्द के प्रत्यक्ष शिष्य पं. कालूराम जी के उपदेशों से गणपति जी आर्यसमाजी बने। २२ वर्ष की अवस्था में आपने आर्य समाज में प्रवेश किया। आपकी वाग्मिता तथा तर्कशक्ति का परिचय आर्य जनता को समय-समय पर मिलता रहा। ईश्वर सिद्धि तथा वेदों की अपौरुषेयता पर आपके व्याख्यान सहस्त्रों की उपस्थिति में सुने जाते थे। शास्त्रार्थों में उन्होंने अनेक पण्डितों, पादरियों तथा अन्य मतावलम्बियों को पराजित किया था। **३९ वर्ष की अल्पायु में पं. गणपति शर्मा का २७ जून १९१२ को जगराव (पंजाब) में निधन हुआ।**

Design@©MITTAL 9829797513

प्रेषकः
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

1026-- श्री व्यवस्थापक
साप्ताहिक आर्यसंदेश, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि
सभा, 15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली